अहिंसक - नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि

अणुव्रत

ई-संस्करण

वर्ष: 3, अंक: 5-7

तुलसी अणुव्रत सिंहनाद विशेषांक

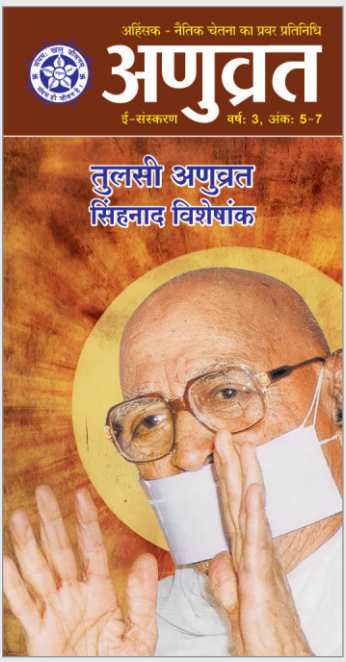

वर्ष : 3 अंक : 5-7

सितम्बर-नवम्बर 2025

संपादक
संचय जैन

सह संपादक
मोहन मंगलम

संयोजक समाचार
पंकज दुधोड़िया

चित्रांकन
मनोज त्रिवेदी

पेज सेटिंग
मनीष सोनी

ई-संस्करण
विवेक अग्रवाल

आचार्य तुलसी

जैन तेरापंथ संप्रदाय के आचार्य होते हुए अणुव्रत जैसे जन-धर्म का प्रवर्तन किया, यह एक विरल घटना थी। वे धर्म संप्रदाय की सीमाओं से परे देखते थे और बिना किसी जाति-वर्ग के भेद के प्रत्येक इंसान में मानव धर्म को स्थापित होते देखना चाहते थे।

अध्यक्ष : **प्रतापसिंह दुगड़**
महामंत्री : **मनोज सिंघवी**
कोषाध्यक्ष : **राकेश बरड़िया**

अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 2
दूरभाष : 011-23233345
मोबाइल : 9116634512

www.anuvibha.org
anuvrat.patrika@anuvibha.org

अणुव्रत पत्रिका के गौरवशाली 70 वर्ष

अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक

परम पूज्य आचार्य श्री तुलसी

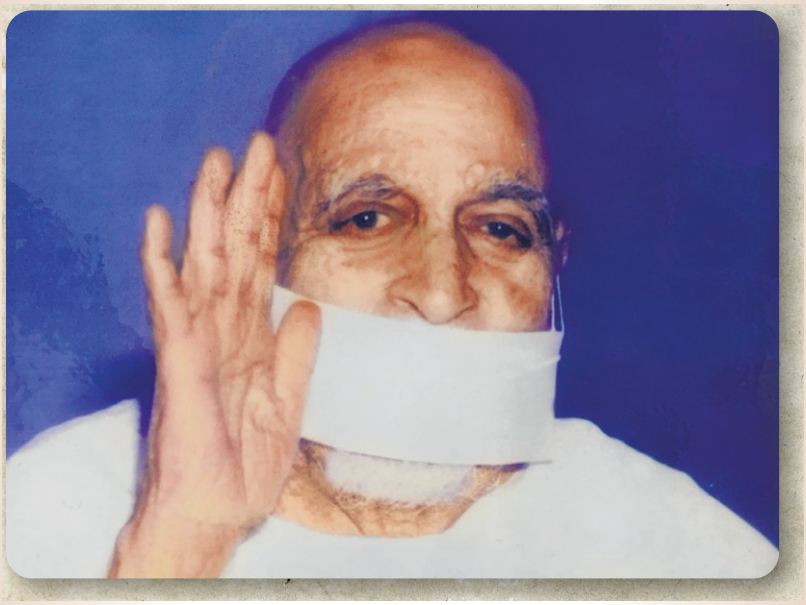

के 100वें दीक्षा दिवस एवं
पावन जन्म की 111वर्षीय परिसम्पन्नता
के अवसर पर सादर समर्पित

तुलसी अणुव्रत सिंहनाद विशेषांक

अणुविभा

प्रकाशक
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
कार्यालय : राजसमंद ■ दिल्ली ■ लाडनूं ■ जयपुर

लोकार्पण के पावन पल

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण द्वारा प्रदत्त पावन पाथेय...

यह 'तुलसी अणुव्रत सिंहनाद' विशेषांक है। आचार्य श्री तुलसी का है.. अणुव्रत का है... तुलसी अणुव्रत सिंहनाद सारे जग में प्रसरेगा।

यह काफी मोटा है, बड़ा है आकार में भी। गुरुदेव तुलसी के जीवन के कुछ प्रसंग संभवत: इसके द्वारा स्मृति में आ सकते हैं, जानकारी में आ सकते हैं।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी खूब अच्छा - नैतिकता का, संयम का प्रसार कार्य करती रहे। अच्छा है।

एक परिचय

तुलसी-अणुव्रत-दर्शन

111 मोतियों की इस माला से गुजरते हुए हम जानेंगे - क्या है तुलसी का दर्शन! क्या है अणुव्रत का दर्शन! और सबसे महत्वपूर्ण - क्या है तुलसी का अणुव्रत-दर्शन! मोती-दर-मोती, यह एक नये जीवन-दर्शन से परिचित होने का अनुभव है - स्वयं आचार्य तुलसी के शब्दों में। इस सारगर्भित प्रस्तुति का स्रोत है तुलसी वाङ्मय। साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा के विलक्षण संपादन में सृजित आचार्य तुलसी की आत्मकथा 'मेरा जीवन : मेरा दर्शन' के 25 ग्रंथ। एक महामानव के देदीप्यमान जीवन के प्रसंग-दर-प्रसंग अपने पन्नों में समेटे तुलसी-डायरियाँ, जिनमें गुरुदेव तुलसी स्वयं अपनी कलम से इतिहास को उकेरा करते थे, इस वाङ्मय का मूलाधार बनी हैं। तुलसी के अणुव्रत-युग को जानने-समझने में रुचिशील पाठकों को यह प्रयास निश्चय ही भीतरी सुकून देगा।

तुलसी स्मृति

'अणुव्रत' पत्रिका का यह 'तुलसी अणुव्रत सिंहनाद' विशेषांक अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक गुरुदेव तुलसी को उनके 100वें दीक्षा दिवस तथा उनके पावन जन्म की 111 वर्षीय परिसम्पन्नता के पुनीत अवसर पर समर्पित है। आचार्य तुलसी का विद्वत शिष्य समुदाय इस अवसर पर कृतज्ञता का अनुभव करता है और विशेषांक का यह भाग इन कृतज्ञ भावों की प्रस्तुति का एक विनम्र माध्यम बन रहा है। गुरुदेव तुलसी द्वारा प्रणीत और आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा प्रशस्त अणुव्रत अनुशास्ता नेतृत्व परंपरा का वर्तमान में आचार्य महाश्रमण नव इतिहास सृजन के राजपथ पर सक्षम प्रवाहन कर रहे हैं।

अणुव्रत सिंहनाद

अणुव्रत के विचार को विभिन्न क्षेत्र के शीर्ष नेतृत्व का समर्थन, सद्भाव व सहयोग प्राप्त हुआ है। आचार्य तुलसी के साथ इन शीर्षस्थ नेताओं के संवाद की झलकियां इस विशेषांक को मूल्यवान बनाती हैं। अणुव्रत आंदोलन की सुदीर्घ यात्रा में अनेक गीत और उद्घोष लोकप्रिय हुए। उनमें से चुनिंदा गीत इस विशेषांक का हिस्सा बने हैं। साथ ही अनेक उद्घोष कलात्मक प्रस्तुति के साथ आपको यहाँ मिलेंगे। अणुव्रत दर्शन को समझने में आचार्य तुलसी कृत ये गीत और उद्घोष बड़ी भूमिका निभाते रहे हैं।

कृतज्ञ भाव

यह विशेषांक अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक गुरुदेव तुलसी को समर्पित है। समग्र अणुव्रत परिवार इस अवसर पर कृतज्ञता का अनुभव करता है और विशेषांक का यह भाग इन कृतज्ञ भावों की प्रस्तुति का एक विनम्र माध्यम बन रहा है। इन आलेखों, संस्मरणों और कविताओं के माध्यम से हम जानेंगे कि कैसे हर एक दिशा से, हर एक कोण और हर दृष्टिकोण से उस महामानव को देखने, समझने से एक नयी तस्वीर उभरती है। आंशिक अथवा पूर्ण, लेकिन महानता का अक्स हर तस्वीर में स्वत: उभर आता है।

पत्रिका का सफरनामा

'अणुव्रत' पत्रिका की सात दशकीय यात्रा गौरवशाली रही है। एक अव्यावसायिक, मूल्याधारित प्रकाशन का लंबा सफरनामा इसकी महत्ता का बखान स्वयं कर रहा है। इस मोड़ पर एक संक्षिप्त-सा पुनरावलोकन समीचीन जान पड़ता है। इस यात्रा में संपादन व प्रकाशन से जुड़े रहे कर्मठ व्यक्तित्व हम सब के आदर व सम्मान के हकदार हैं। पूर्व संपादकों ने अपने आलेखों के माध्यम से अपने अनुभव साझा किये हैं। वहीं सभी संपादकों के एक-एक प्रतिनिधि संपादकीय पाठक को उनसे जुड़ने का सशक्त माध्यम बनेंगे।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के पावन सान्निध्य में 'तुलसी अणुव्रत सिंहनाद' विशेषांक का लोकार्पण किया गया। वीडियो देखने के लिए क्लिक करें...

अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी

के 100 वें दीक्षा दिवस

एवं पावन जन्म की 111 वर्षीय परिसंपन्नता पर

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी की

अनुपम प्रस्तुति

पुनः पुनः पठनीय और संग्रहणीय

488 पृष्ठ

अणुव्रत तुलसी सिंहनाद विशेषांक

विशिष्टताएं

आचार्य तुलसी से जुड़े 111 ऐतिहासिक प्रसंग ■ चित्र वीथिका ■ तुलसी अणुव्रत काव्य सुधा
अणुव्रत उद्घोष ■ कृतज्ञ भाव और संस्मरण ■ अणुव्रत पत्रिका का सफरनामा

अपनी प्रति मँगवाने के लिए संपर्क करें

+919116634512 ■ anuvrat.patrika@anuvibha.org

तुलसी रचित अणुव्रत संसार

प्रारंभ से लेकर वर्तमान तक, अणुव्रत आंदोलन की लगभग 77 वर्ष की यह सुदीर्घ यात्रा स्वयं में एक गौरवमय इतिहास समेटे है। तीन अनुशास्ता और उनकी अगुआई में समर्पित धवल सेना, अनेक संस्थाएं, सैकड़ों जीवनदानी कार्यकर्ता, हजारों स्वयंसेवक, अणुव्रत संकल्पित लाखों आमजन और अनगिनत समर्थक! जन-जन के मन को आंदोलित कर देने वाला अणुव्रत आंदोलन!

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखें तो अणुव्रत आंदोलन के लिए पिछले 5 वर्ष विशिष्ट रहे हैं। अणुव्रत अनुशास्ता की दूरदर्शी सोच से सन् 2020 में फलित हुआ अणुव्रत संस्थाओं का एकीकरण। अणुव्रत के सभी प्रकल्प एक छत के नीचे और एक मंच पर। एक संस्था - अणुविभा के बैनर तले। अणुव्रत के विभिन्न प्रकल्पों को नया स्वरूप। सन् 2023 में अणुव्रत आंदोलन का अमृत महोत्सव वर्ष प्रारंभ हुआ। वर्षपर्यंत अणुव्रत की अनुगूँज रही। इसी बीच सन् 2024 में अणुव्रत के महत्वपूर्ण प्रकाशन 'बच्चों का देश' बाल पत्रिका की रजत जयंती और अब 2025 में 'अणुव्रत' पत्रिका के सात दशक सम्पूर्ति का अवसर हमारे समक्ष उपस्थित है।

तुलसी अणुव्रत सिंहनाद

'अणुव्रत' पत्रिका का यह विशेषांक एक विशेष अवसर पर प्रस्तुत हो रहा है। यह पावन अवसर है अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक महान संत आचार्य तुलसी की मुनि दीक्षा के 100वें वर्ष और उनके पावन जन्म की 111 वर्षीय परिसम्पन्नता का। आचार्य तुलसी ने जिन परिस्थितियों में अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया और अपने अतुलनीय

आत्मबल से इसे आमजन से परिचित करवाते हुए इसके सिंहनाद को राष्ट्रपति भवन और संयुक्त राष्ट्र संघ तक गुंजायमान कर दिया, यह मानव इतिहास का एक स्वर्णिम शिलालेख बन गया।

आचार्य तुलसी ने अपने प्रसिद्ध अणुव्रत गीत की अंतिम पंक्तियों में लिखा है – 'तुलसी अणुव्रत सिंहनाद सारे जग में प्रसरेगा!' उनकी यह मनोकामना भविष्यवाणी बन कर उनके अपने जीवनकाल में साकार हो गयी, चरितार्थ हो गयी। तुलसी अणुव्रत का सिंहनाद कल भी जरूरी था, आज भी है और कल भी रहेगा। यही इस विशेषांक और इसके नाम की प्रासंगिकता भी है।

इस विशेषांक को अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी, साध्वीप्रमुखाश्री, मुख्यमुनि प्रवर, साध्वीवर्याजी और आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री के विशिष्ट आलेख गरिमा और गौरव प्रदान कर रहे हैं। चारित्रात्माओं, अणुव्रत कार्यकर्ताओं और प्रतिष्ठित साहित्यकारों ने अपने आलेखों से इसे समृद्ध किया है।

'अणुव्रत' पत्रिका ने अपने प्रकाशन के 70 वर्ष पूर्ण किये हैं। यह विशेषांक गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता का इजहार तो है ही, पत्रिका की यात्रा में सहभागी बने हर एक शख्स के प्रति एक विनम्र आभाराभिव्यक्ति भी है।

22 अक्टूबर 2025 – मैंने 60 बसंत पार किये और 23 अक्टूबर – अणुव्रत दिवस – गुरुदेव के पावन जन्म की 111 वर्षीय परिसंपन्नता के दिन तुलसी अणुव्रत सिंहनाद विशेषांक गुरु चरणों में भेंट – आचार्य श्री महाश्रमण – जिनमें मैंने हमेशा गुरु तुलसी के दर्शन किये हैं। यह संयोग है! नियति है! एक चक्र की परिपूर्णता का संकेत! मन में अपार संतोष, अनिर्वचनीय आह्लाद और परिपूरित कृतज्ञ भाव के साथ – नमन! नमन! नमन!

– संचय जैन

sanchay_avb@yahoo.com

तुलसी अणुव्रत सिंहनाद
अप्रतिम शीर्ष संवाद

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

पंडित जवाहरलाल नेहरू

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

अध्यक्ष के उद्गार

'तुलसी अणुव्रत सिंहनाद' विशेषांक के माध्यम से आपसे रूबरू होकर आत्मीय खुशी का अनुभव कर रहा हूँ। अणुव्रत आंदोलन का सुदीर्घ कालखंड अनेकानेक उपलब्धियों से भरा रहा है। सात दशक से अधिक की इस यात्रा में जन-जन को अणुव्रत दर्शन से अनुप्राणित करने के उद्देश्य से न जाने कितने प्रकल्प संचालित हुए हैं। 'अणुव्रत' पत्रिका उनमें से एक महत्वपूर्ण प्रकल्प है।

पत्रिका प्रकाशन के 70 वर्ष पूर्ण होने पर प्रकाशित यह 'तुलसी अणुव्रत सिंहनाद' विशेषांक हम सब के पूज्य आचार्य तुलसी को समर्पित है। आचार्य तुलसी के संयम ग्रहण का शताब्दी वर्ष प्रारंभ हो रहा है, वहीं उनके पावन जन्म की 111 वर्षीय परिसम्पन्नता का भी यह सुअवसर है। मुझे विश्वास है कि इस ग्रंथ के माध्यम से हम अणुव्रत को बेहतर समझ सकेंगे और नयी ऊर्जा व प्रेरणा के साथ अहिंसक समाज निर्माण के इस मिशन में सफलताओं को हस्तगत कर पाएंगे।

आदरणीय संचय जी जैन जो सम्पादकीय दायित्व बखूबी निभा रहे हैं और विशेष रूप से इस विशेषांक में आपके श्रम व समय का जो नियोजन हुआ है, वह उल्लेखनीय है। निवर्तमान अध्यक्ष आदरणीय अविनाश जी नाहर के संयोजकत्व में इस विशेषांक का रूप निखर कर आया है।

मैं इस विशेषांक के प्रकाशन से जुड़ी सम्पूर्ण टीम को बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि पाठकगण इस प्रयास को पसंद करेंगे। विशेषांक हेतु अपना रचना सहयोग तथा विज्ञापन सहयोग देने वाले सभी गणमान्य जनों को भी बहुत-बहुत धन्यवाद।

– **प्रतापसिंह दुगड़**, अध्यक्ष, अणुविभा

संयोजक के उद्‌गार

'अणुव्रत' पत्रिका के विशेषांकों की समृद्ध शृंखला में एक महत्वपूर्ण कड़ी है 'तुलसी अणुव्रत सिंहनाद' विशेषांक। इसके प्रकाशन का अवसर भी विशेष है – अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी के पावन जन्म की 111 वर्षीय परिसम्पन्नता, दीक्षा शताब्दी वर्ष का प्रारंभ और अणुव्रत पत्रिका के प्रकाशन के 70 वर्ष। गत वर्ष ही हमने अणुव्रत आंदोलन के 75 वर्ष 'अणुव्रत अमृत महोत्सव' के रूप में मनाये थे। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के प्रेरक मार्गदर्शन में अणुव्रत आंदोलन निरंतर गतिशील है, विकासमान है, यह आत्मिक संतोष की अनुभूति देता है।

अणुव्रत संस्थाओं के एकीकरण के बाद से ही अणुव्रत आंदोलन के समस्त प्रकल्प अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के अंतर्गत संचालित हो रहे हैं। 'अणुव्रत' पत्रिका का इनमें महत्वपूर्ण स्थान है। अणुव्रत के संदेश को प्रसारित करने का यह एक प्रभावी मंच है।

इस विशेषांक के प्रकाशन का जब निर्णय लिया गया, उसी बैठक में अनेक साथियों ने अपने विज्ञापन की स्वीकृति प्रदान कर पूरी टीम में उत्साह भर दिया था। आज जब यह विशेषांक आपके हाथों में प्रस्तुत है, अत्यंत आत्मीय भाव से प्रदत्त लगभग 90 विज्ञापन इसमें शामिल हैं। यह समस्त विज्ञापनदाताओं का अणुव्रत के प्रति लगाव और अणुविभा टीम के प्रति सहयोग भाव को दर्शाता है। हम आप सभी के प्रति आदर व आभार व्यक्त करते हैं।

आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में भी आपका सहयोग व समर्थन अणुव्रत आंदोलन को और समस्त अणुव्रत प्रकल्पों को इसी प्रकार मिलता रहेगा।

– **अविनाश नाहर**, संयोजक, विशेषांक

महामंत्री के उद्‌गार

अणुविभा द्वारा प्रकाशित 'अणुव्रत' पत्रिका अणुव्रत आंदोलन का मुखपत्र है। अणुव्रत के विचार एवं कार्यक्रमों को प्रचारित-प्रसारित करने का यह एक सशक्त माध्यम है। इस पत्रिका द्वारा अपने प्रकाशन के 70 वर्ष पूर्ण करना निश्चय ही हमारे लिए गौरव की बात है। इस अवसर पर पत्रिका के पाठकों एवं लेखकों को बहुत-बहुत बधाई।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी के आध्यात्मिक नेतृत्व व मुनिश्री मननकुमार जी के आध्यात्मिक पर्यवेक्षण में अणुविभा भारत सहित अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अणुव्रत की विचारधारा को केंद्र में रखकर व्यापक कार्यक्रमों का संचालन करती है। देशभर में सक्रिय 200 से अधिक अणुव्रत समितियाँ और अणुव्रत मंच और इनसे जुड़े हजारों अणुव्रत कार्यकर्ता इस आंदोलन की ताकत हैं।

'अणुव्रत' पत्रिका अणुविभा का एक विशिष्ट प्रकल्प है। प्रतिमाह जहाँ इसका प्रिन्ट फॉर्मेट में प्रकाशन होता है, वहीं सोशल मीडिया के माध्यम से इसका ई-फॉर्मेट हजारों-हजारों लोगों तक पहुँचता है। प्रकाशन के सात दशक के इस ऐतिहासिक पड़ाव पर पत्रिका के 'तुलसी अणुव्रत सिंहनाद' विशेषांक का प्रकाशन हमारे लिए गौरव की बात है।

मैं सभी अणुव्रत समितियों, अणुव्रत मंचों और अणुव्रत कार्यकर्ताओं से अपील करता हूँ कि 'अणुव्रत' पत्रिका को अधिक से अधिक हाथों में पहुँचाने का समर्पित प्रयास करें ताकि संयम, सद्‌भावना, शांति, अहिंसा, नैतिकता, पर्यावरण संरक्षण और नशामुक्ति के संदेश को हम जन-जन तक पहुँचा सकें और एक स्वस्थ समाज के निर्माण में अपना योगदान दे सकें।

– **मनोज सिंघवी**, महामंत्री, अणुविभा

अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन

आखिर लोगों की प्रतीक्षा पूरी हुई। फाल्गुन शुक्ल द्वितीया (1 मार्च 1949) का दिन आया। सूर्योदय के साथ ही साध्वियों के मंगल संगान से कार्यक्रम का प्रारम्भ हुआ। हजारों लोगों की उपस्थिति में जनता का एक नैतिक अभियान में सम्मिलित होने का आह्वान किया गया। सामान्यत: अच्छा जीवन जीने की दिशा और विशेष उत्साह के साथ नये अभियान में संभागिता के लिए अभिप्रेरणा दी गयी। उससे जनता में नयी चेतना और स्फुरणा का संचार हो गया। नये अभियान के उद्घाटन की औपचारिकता के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हो गया। लोगों के चेहरों पर प्रसन्नता मिश्रित उत्सुकता की झलक देखी गयी। कार्यक्रम का दूसरा चरण प्रवचन के समय व्यापक रूप में मनाया गया। पहले से घोषणा होने के कारण उस दिन प्रवचन के समय उपस्थिति बहुत अधिक थी। मैंने उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित कर कहा - ''जो योजना आज आपके सामने आयी है, उसका सम्बन्ध किसी जाति, सम्प्रदाय आदि के साथ नहीं है। कोई भी व्यक्ति इन नियमों को स्वीकार कर अणुव्रती संघ में सम्मिलित हो सकता है। इसकी नियमावली का आधार अहिंसा, सत्य आदि पाँच व्रत और इस युग की ज्वलंत बुराइयों का परिशोधन करने वाले तत्त्व हैं। आज जो व्यक्ति इस संघ में सम्मिलित होंगे, उनका नामांकन मैं स्वयं करूँगा।''

कॉपी और पेंसिल मेरे हाथ में थी। सामने था विशाल जनसमुदाय। मैंने एक बार फिर आह्वान किया। सभा में कुछ हलचल हुई। उसके बाद तो लोगों में खड़े होने की होड़-सी लग गयी। मैं लिखता जा रहा था। एक-एक कर इकहत्तर नाम आ गये। लिखते-लिखते हाथ थक गया, पर लोग नहीं थके।

निर्माता पुरुष थे आचार्य तुलसी

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण

आचार्य तुलसी का संकल्पबल विशिष्ट था, तदनुरूप उनका पुरुषार्थ भी वैशिष्ट्य लिये हुए था। उन्होंने आत्मकल्याण और लोककल्याण के लक्ष्य के साथ हजारों किलोमीटर की प्रलम्ब पदयात्राएं कीं। न केवल तेरापंथ शासन अपितु जैन शासन और मानव जाति भी उनके महनीय अवदानों से उपकृत हुए। उन अवदानों ने उन्हें एक क्रांतिकारी आचार्य के रूप में प्रतिष्ठापित किया। अणुव्रत आंदोलन उनके क्रांत विचारों से प्रस्फुटित एक ऐसी आलोक रश्मि है, जो अनैतिकता और चरित्रहीनता के तिमिर के बीच मानवता को आलोकित करने में समर्थ है।

हिन्दुस्तान की संत परंपरा गौरवपूर्ण और महिमामंडित रही है। इस वसुंधरा पर प्रसूत अनेक संतों का राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में तप: पूत दिशादर्शन और अविश्रांत श्रम रहा है। भारत की इस गरिमामयी ऋषि परपंरा के एक महान संतरत्न थे – आचार्य तुलसी। वे बीसवीं सदी के एक महापुरुष थे। वे बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी आचार्य थे। उनके ऊर्जस्वल कर्तृत्व को विभिन्न उपमाओं से उपमित किया जा सकता है। उनका आकर्षक और तेजस्वी बाह्य आभामंडल साधना से अभिसिक्त उनके विलक्षण आन्तरिक व्यक्तित्व की मानो सुवास लिये हुए था।

आचार्य तुलसी महान समाज सुधारक थे तो कुशल प्रवचनकार और साहित्यस्रष्टा भी थे। वे एक योगी थे, उनके कर्तृत्व ने उन्हें युगप्रधान और युगपुरुष के रूप में भी उभारा। वे एक श्रेष्ठ संगीतकार थे तो उनके मुख से होने वाला भावपूर्ण मधुर संगान भी श्रोताओं को भावविभोर करने वाला होता। राष्ट्र के उच्चपदस्थ व्यक्तियों का उन्होंने

पथदर्शन किया तो दलितों, पतितों और स्खलितों को भी उनसे पावन प्रेरणा प्राप्त हुई। लाखों-लाखों लोगों से उन्हें श्रद्धा, सम्मान, समर्थन और श्लाघा प्राप्त हुए तो आंतरिक और बाह्य विरोध एवं संघर्ष भी उनके साथ जुड़े रहे, किंतु विरोधों में भी उनका धैर्य और साहस मुखर रहा। कुशल अनुशास्ता के रूप में उनका वात्सल्य भाव प्रखर था तो वे उचित समय पर कड़ाई करना भी जानते थे।

आचार्य तुलसी की प्रबल पुण्यवत्ता का प्रतिफल था कि जीवन के बारहवें वर्ष में संन्यस्त बने और बाईस वर्ष की नवयौवन अवस्था में विशाल धर्मसंघ के नेतृत्व का दायित्व उनके कंधों पर आ गया। अपने गुरु परम पूज्य कालूगणी का विश्वास उन्होंने अर्जित ही नहीं किया, लगभग छह दशक तक तेरापंथ धर्मसंघ का कुशल नेतृत्व कर उसे सार्थक भी कर दिखाया। अपनी विद्यमानता में उन्होंने अपने उत्तराधिकारी युवाचार्य महाप्रज्ञ को आचार्य रूप में प्रतिष्ठित करते हुए प्राप्त सत्ता का परित्याग कर एक विरल उदाहरण प्रस्तुत किया। उनका यह त्याग स्मरणीय और स्तुत्य है।

आचार्य तुलसी निर्माता पुरुष थे। कितने-कितने व्यक्तियों का निर्माण उन्होंने किया। कितने-कितने योगी उनके द्वारा निर्माण को प्राप्त हुए। कितनी-कितनी प्रतिभाओं को उन्होंने निखारा और संवारा। कितने-कितने साहित्यकार, कवि, वक्ता और कलाकार उनकी वात्सल्यमयी छांह में निर्मित हुए। कितने-कितने परोपकार परायण व्यक्ति उनके नेतृत्व में कार्यशील रहे।

नारी जाति के उन्नयन में उन्होंने अपनी शक्ति का नियोजन किया। सुसंस्कारित युवा पीढ़ी और बाल पीढ़ी के निर्माण हेतु अनेक आयाम उद्घाटित कर उन्होंने राष्ट्र के शुभ भविष्य के निर्माण का पथ प्रशस्त किया।

परम पूज्य, परम श्रद्धेय, परम कृपालु, परम उपकारपरायण गुरुदेव हालाँकि सदेह हमारे बीच नहीं हैं, किन्तु उनका यश:शरीर आज भी विद्यमान है। स्मृतियों के वातायन से आज भी उनके दर्शन होते हैं।

अणुव्रत देश-विदेश में

साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा

आचार्य श्री तुलसी ने अध्यात्म को शिखर तक पहुँचाने के लिए अनेक महत्वपूर्ण अवदान दिये। उनमें एक अवदान है - अणुव्रत आन्दोलन। राजस्थान के सरदारशहर कस्बे में अणुव्रत का श्रीगणेश हुआ। आज उसकी गूँज केवल हिन्दुस्तान में ही नहीं, विश्व में हो रही है। आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन को जन-जन में व्यापक बनाने के लिए प्रलम्ब यात्राएं कीं। प्रवचन के माध्यम से लोगों को अणुव्रती बनने की प्रेरणा दी। गाँवों, कस्बों और शहरों में अणुव्रत का शंखनाद हुआ। आचार्य श्री तुलसी ने छोटे-छोटे व्रतों से अच्छे इंसान का निर्माण करने में अपना योगदान दिया। उनके श्रम करने का यही उद्देश्य था - जन कल्याण हो, चरित्र का विकास हो, अपनी आत्मा का विकास हो। अणुव्रत आन्दोलन ज्ञानवर्धक आन्दोलन नहीं है, यह जीवन-परिवर्तन का आन्दोलन है, लोक कल्याणकारी और मानवहितकारी आन्दोलन है।

अणुव्रत की उपयोगिता भारत में ही नहीं, भारत के बाहर भी है। प्रारंभ में जब मैंने अणुव्रत के विषय में सुना, उसकी नियमावली को देखा तो मुझे प्रतीत हुआ कि यह हिन्दुस्तान में रहने वालों के लिए उपयोगी है तथा विदेश में रहने वालों के लिए भी उपयोगी है। उपयोगी वह होता है जिसका त्रैकालिक महत्व होता है। जिसका त्रैकालिक महत्व होता है, वह प्रासंगिक भी बन जाता है।

सन् 1992 में, मैं समणी के रूप में न्यू औरलियन्स (अमेरिका) गयी थी। वहाँ मैंने धर्म के संदर्भ में लोगों के साथ वार्तालाप किया। वहाँ एक पादरी भी हमारी चर्चा में सम्मिलित हो गया। उसने मुझे कहा- ''आप मुझे ऐसे धर्म का नाम बताइए जो जाति, वर्ण और सम्प्रदाय के घेरे से मुक्त

हो। जो इंसान को इंसानियत का पाठ पढ़ाये।'' तत्काल मेरे मस्तिष्क में अणुव्रत नाम उभर कर आया।

मैंने उसे कहा– ''हमारे गुरु हैं आचार्य श्री तुलसी। उन्होंने लोक कल्याण के लिए अणुव्रत आन्दोलन का प्रवर्तन किया है। अणुव्रत से तात्पर्य है छोटे-छोटे संकल्प। जो व्यक्ति इन संकल्पों को स्वीकार करता है, वह अच्छा इंसान बन सकता है।'' इस संदर्भ में मैंने अणुव्रत के ग्यारह नियमों को भी समझाने का प्रयास किया। उनको यह भी बताया कि यह निर्विशेषण धर्म है। इसका किसी भी सम्प्रदाय, जाति, वर्ग के साथ कोई संबंध नहीं है।

पादरी ने इस व्याख्या को सुनकर कहा– ''इस धर्म को तो मैं भी स्वीकार कर सकता हूँ।''

आचार्य तुलसी युग पुरुष थे। उन्होंने युग की धड़कन को पहचाना और अपना युगानुरूप चिन्तन जनता के सामने प्रस्तुत किया, वह सबके लिए उपयोगी बन गया।

आचार्य श्री तुलसी का सौवां दीक्षा दिवस सामने है। 'संयममय जीवन हो' उनका प्रमुख घोष रहा है। अणुव्रत इसका हार्द है। हर एक सहभागिता इस संयम की दिशा में रहे। यही उनकी एक सार्थक स्मृति हो सकेगी।

“

केवल स्वतंत्र हो जाने से ही सारी समस्याओं का हल नहीं हो जाता। स्वतंत्रता के बाद और ईमानदारी के साथ काम करने की आवश्यकता है। आचार्य श्री तुलसी देश के नैतिक धरातल को उठाने का सतत प्रयत्न कर रहे हैं। मुझे आशा है इस अणुव्रत आंदोलन से समाज व देश का काफी भला होगा।

– **मैथिलीशरण गुप्त**, प्रसिद्ध कवि व साहित्यकार

”

मानवता के महानायक महासंत आचार्य तुलसी

मुख्यमुनि महावीरकुमार

परम पूज्य अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य तुलसी भारत की वसुंधरा पर जन्म लेने वाले एक ऐसे सन्त पुरुष थे जिन्होंने मात्र 11 वर्ष की अवस्था में संन्यास स्वीकार लिया था। वर्तमान में उनके संयम ग्रहण का शताब्दी वर्ष चल रहा है। परम पूज्य आचार्य तुलसी का बाह्य व्यक्तित्व और आन्तरिक व्यक्तित्व महनीयता लिये हुआ था, उनका कर्तृत्व जन-कल्याणकारी था तथा उनका नेतृत्व कार्य की सफलता का विश्वास था। उनकी वाणी में ओजस्विता, चेहरे पर तेजस्विता व मस्तिष्क मनस्विता से ओतप्रोत था। उनकी सन्निधि में आने वाला हर मानव स्वयं को सकारात्मक ऊर्जा से ऊर्जान्वित महसूस करता।

युगप्रधान, युगपुरुष आचार्य श्री तुलसी ने मानव को मानवता की सीख देने के लिए, मानव के चारित्रिक उत्थान के लिए, भारत को असली आजादी दिलाने के लिए 'संयम: खलु जीवनम् - संयम ही जीवन है' के उद्घोष के साथ एक ऐसे आंदोलन का प्रवर्तन किया, जो पूरी मानव जाति के लिए वरदान बन गया। एक संप्रदाय विशेष के अधिनेता होने के बावजूद उन्होंने एक ऐसी क्रांति का शंखनाद किया जो वर्ण, जाति, संप्रदाय की दीवारों से मुक्त विश्व धर्म बन सके। उस आंदोलन का नाम था 'अणुव्रत'।

आचार्य तुलसी दूरदर्शी महापुरुष थे। आने वाले समय की आहट पाकर वे यथोचित निर्णय लेने से भी नहीं झिझकते थे। इस संदर्भ में उनकी जागरुकता अनिर्वचनीय थी। उनके द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत जैसा महनीय उपक्रम उनकी दूरदर्शिता की

जीवंत निशानी है। उनके शासनकाल में शुरू हुए प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान जैसे उपक्रम भी सर्व जनकल्याणकारी उपक्रम साबित हुए हैं।

परम पूज्य आचार्य तुलसी का सम्पूर्ण जीवन स्व-परकल्याण को समर्पित था। उन्होंने न केवल तेरापंथ धर्मसंघ के साधु-साध्वी और श्रावक-श्राविका समाज का उन्नयन किया, साथ-साथ में जैन समाज और मानव समाज के उत्थान के लिए भी अपने श्रम एवं शक्ति का नियोजन किया। सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण के लिए उनके द्वारा प्रदत्त अणुव्रत आंदोलन युग-युग तक प्रकाशपुंज बना रहेगा और युग की समस्याओं को समाधान देता रहेगा। एक धर्माचार्य द्वारा इस प्रकार का प्रयास संभवत: पहले कभी नहीं हुआ था। अणुव्रत दर्शन को संपुष्ट करने के उद्देश्य से प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान जैसे प्रायोगिक उपक्रम प्रारंभ किये गये। अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान - यह त्रिपदी आदर्श व्यक्तित्व निर्माण की एक समुचित आधारशिला है। इस आधारशिला पर एक-एक व्यक्ति को जोड़ कर खड़ा किया गया समाज का प्रासाद एक सुन्दर राष्ट्र और सुन्दर विश्व निर्माण का दृश्य दिखा सकता है।

अणुव्रत जैसे सार्वभौम दर्शन की विश्व को महती आवश्यकता है। दुनिया की वर्तमान स्थिति अत्यन्त चिंताजनक है। युद्ध से मानवता लहूलुहान हो रही है। विलासिता और आर्थिक लाभ के लिए प्रकृति और पर्यावरण को नुकसान पहुँचाया जा रहा है। सहिष्णुता कम हो रही है। छोटी-बड़ी समस्या के लिए हिंसा का सहारा लिया जा रहा है। व्यक्तिगत जीवन में नैतिकता, सौहार्द, सहनशीलता, धैर्य जैसे गुण संकुचित हो रहे हैं। इन परिस्थितियों में अणुव्रत का मंत्र 'संयम ही जीवन है' समाधान का व्यावहारिक मार्ग प्रस्तुत करता है। परम पूज्य गुरुदेव तुलसी की दीक्षा शताब्दी का अवसर उनके अवदानों को व्यापक बनाने वाला बने, ऐसी मंगलभावना है।

अणुव्रत की बात

मनोज त्रिवेदी

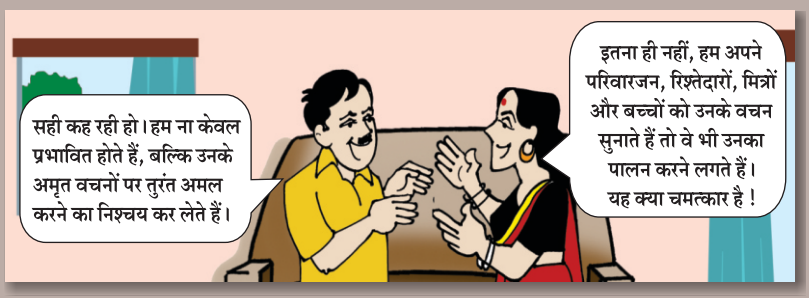

आचार्य श्री तुलसी

अणुव्रत आचार संहिता

1

मैं किसी भी निरपराध प्राणी का संकल्पपूर्वक वध नहीं करूँगा।
•मैं आत्म-हत्या नहीं करूँगा।
•मैं भ्रूण-हत्या नहीं करूँगा।

2

मैं आक्रमण नहीं करूँगा।
•आक्रामक नीति का समर्थन नहीं करूँगा। •विश्व-शांति तथा नि:शस्त्रीकरण के लिए प्रयास करूँगा।

3

मैं हिंसात्मक एवं तोड़-फोड़ मूलक प्रवृत्तियों में भाग नहीं लूँगा।

4

मैं मानवीय एकता में विश्वास करूँगा। •जाति, रंग आदि के आधार पर किसी को ऊँच-नीच नहीं मानूँगा।
•अस्पृश्य नहीं मानूँगा।

5

मैं धार्मिक सहिष्णुता रखूँगा।
•साम्प्रदायिक उत्तेजना नहीं फैलाऊँगा।

6

मैं व्यवसाय और व्यवहार में प्रामाणिक रहूँगा।
•अपने लाभ के लिए दूसरों को हानि नहीं पहुँचाऊँगा। •छलपूर्ण व्यवहार नहीं करूँगा।

7

मैं ब्रह्मचर्य की साधना और संग्रह की सीमा का निर्धारण करूँगा।

8

मैं चुनाव के संदर्भ में अनैतिक आचरण नहीं करूँगा।

9

मैं सामाजिक रूढ़ियों को प्रश्रय नहीं दूँगा।

10

मैं व्यसन-मुक्त जीवन जीऊँगा। •मादक तथा नशीले पदार्थों - शराब, गांजा, चरस, हेरोइन, भांग, तम्बाकू आदि का सेवन नहीं करूँगा।

11

मैं पर्यावरण की समस्या के प्रति जागरूक रहूँगा।
•हरे-भरे वृक्ष नहीं काटूँगा।
•पानी-बिजली आदि का अपव्यय नहीं करूँगा।

उपरोक्त संकल्पों में से सभी या अपने भावानुसार संकल्प लेने के लिए सामने दिये गये चित्र पर क्लिक करें..

तुलसी की तेजस्विता अणुव्रत का आलोक

साध्वीवर्या संबुद्धयशा

आचार्य श्री तुलसी तेजस्वी आचार्य थे। उनकी तेजस्विता को आगम सूक्त के आलोक में देख सकते हैं। उनकी तेजस्विता का एक मानदण्ड था – 'समयं गोयम मा पमायए' यह सूक्त उनके जीवन विकास का महत्वपूर्ण सूत्र था। खुली आँखों से देखे हर स्वप्न को उन्होंने अपने जीवन काल में ही साकार कर दिया क्योंकि कठोर पुरुषार्थ और अमित उत्साह सदा उनके सहयायी रहे।

आचार्य तुलसी ने शताब्दियों की पराधीनता के बाद स्वतंत्र बने देश के निर्माण का सपना देखा, उसे साकार रूप दिया 'अणुव्रत' के रूप में। उन्होंने अपनी तेजस्विता का उपयोग तब किया जब भारत में नैतिक मूल्य चरमरा रहे थे, जब स्वार्थलिप्सा और अर्थलिप्सा की दौड़ में मानव की विवेक चेतना मूर्च्छित हो चुकी थी। प्रामाणिकता और सत्यनिष्ठा ने आँखें मूँद ली थीं। देश की बागडोर थामने वाले हाथ भी भ्रष्टाचार से लिप्त हो चुके थे।

उन्होंने अपनी तेजस्विता का उपयोग किया 'अणुव्रत' का आलोक फैलाने में। अणुव्रत के माध्यम से उन्होंने धर्मक्रांति की। वे धर्म को रूढ़िमुक्त कर उसे जीवन व्यवहार में साकार बनाने के पक्षधर थे। 'अणुव्रत' को सर्वव्यापी बनाने के लिए, नैतिकता का प्रशिक्षण देने के लिए आचार्य तुलसी ने एक आचार संहिता का निर्माण किया। लंबी-लंबी पदयात्राएं कीं, शिष्य-शिष्याओं और कार्यकर्ताओं को इस कार्य में नियोजित किया। विद्यार्थियों में काम किया, शिक्षकों को प्रशिक्षित किया, श्रमिकों-व्यापारियों को उद्‌बोधन दिये। युवकों को पथदर्शन दिया। नारी शक्ति को जगाया, बच्चे-बच्चे को दायित्व का अवबोध कराया। अणुव्रत के कार्यक्रमों

को व्यापकता देने के लिए अणुव्रत सप्ताहों का आयोजन किया। फलस्वरूप समाज तथा राष्ट्र में मानो सुख व शांति की एक लहर-सी दौड़ गयी।

आचार्य तुलसी ने धर्म को अणुव्रत के माध्यम से नये परिवेश में प्रस्तुत करते हुए कहा - ''मैं धर्म को ग्रंथ, पंथ में नहीं, मनुष्य के जीवन में देखना चाहता हूँ। मेरा धर्म प्रामाणिकता, नैतिकता और सद्व्यवहार में है।'' धर्म की इस नयी व्याख्या को सुनकर प्रबुद्ध वर्ग ने कहा - ''आचार्य जी! आप प्रथम धर्माचार्य हैं, जिन्होंने धर्म के मौलिक स्वरूप को जनता के समक्ष प्रस्तुत करने का साहस किया है।''

आचार्य तुलसी ने अणुव्रत की जो लौ जलायी, उसे प्रज्वलित रखने का श्रेय जाता है उनके पट्टधर आचार्य महाप्रज्ञ एवं आचार्य महाश्रमण को। जैसे पाँच महाव्रतों की पुष्टि के हेतु हैं - समिति और गुप्ति की साधना, उसी प्रकार अणुव्रत की पुष्टि हेतु आचार्य महाप्रज्ञ ने राष्ट्र को प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान जैसे विलक्षण अवदान दिये। आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा प्रदत्त अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र के उपक्रम ने भी 'अणुव्रत' के अभियान को और अधिक बल दिया। आचार्य महाश्रमण की अहिंसा यात्रा के मुख्य उद्देश्य - नैतिकता, सद्भावना और नशामुक्ति आचार्य तुलसी के 'अणुव्रत अवदान' की आधुनिक युग में भी प्रासंगिकता सिद्ध कर रहे हैं।

"अणुव्रत वर्ग-भेद की समाप्ति पर बल देता है, यह प्रयास भारत के लिए गौरव की बात है। आचार्य तुलसीजी जैसे सन्त पुरुष ऐसा प्रयास करें, तो ही भारत से वर्ग-भेद की समाप्ति का स्वप्न लिया जा सकता है। वरना यह कार्य बेहद कठिन है।"

- डॉ. राममनोहर लोहिया, समाजवादी राजनेता

आनन्द के अनुभव से उत्साह का संचार

मुनि मनन कुमार
अणुव्रत के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक

वस्तु उत्पाद, व्यय और ध्रौव्यात्मक होती है। वस्तु का ध्रौव्य रूप सदा शाश्वत है और शेष बदलता रहता है। सत्य भी सदा शाश्वत होता है परन्तु उसकी अभिव्यक्ति का प्रकार युगानुरूप बदलता रहता है। जो पुरुष युग की भाषा में उस शाश्वत सत्य को बताता, समझता है, युग को उस दिशा में ले जाता है, वह युगपुरुष कहलाता है। इसी हेतु से अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री तुलसी युगपुरुष कहलाये।

अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान आदि अनेक अवदान उसी की परिणति हैं। उन्होंने धर्म के शाश्वत मूल्यों की पुन: स्थापना की, धर्म को केवल उपासना का तत्त्व न रखकर उसे जीवन व्यवहार से जोड़ा। अहिंसा, नैतिकता, प्रेम, सहिष्णुता आदि धर्म के मूल तत्त्वों को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास किया। जीवन-व्यवहार में इसे स्वीकार करने में आने वाले बाधक तत्त्वों और उसके समाधान को जनता के मध्य प्रस्तुत किया।

परिस्थिति तथा वैयक्तिक संदर्भ में अनेक युगीन समस्याओं का उन्होंने अनुभव किया, यथा -

- ☐ नैतिक आस्था का अभाव
- ☐ प्रतिरोधात्मक शक्ति के विकास की कमी
- ☐ मानसिक दुर्बलता
- ☐ बढ़ती हुई महत्वाकांक्षा
- ☐ अंतहीन स्पर्द्धा
- ☐ कृत्रिम प्रतिष्ठा की भूख

- ☐ नैतिक वातावरण का अभाव
- ☐ समाज के अर्थहीन मानदंड
- ☐ बुराई के प्रति अंगुली-निर्देश की कमी
- ☐ अभाव और अतिभाव
- ☐ कानूनी जटिलताएं

युगपुरुष केवल समस्याओं पर दृष्टिपात ही नहीं करते, उन्हें दूर करने के लिए समाधान भी देते हैं। आचार्य श्री तुलसी ने इनके समाधान के लिए अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान जैसे अवदान दिये, हजारों मीलों तक गाँव-गाँव पदयात्रा कर लोगों को बोध दिया, साहित्य संरचनाएं कीं जिनमें छोटे-छोटे किन्तु महत्वपूर्ण उपाय सुझाये।

आचार्य तुलसी तेरापंथ धर्मसंघ के प्रमुख थे। एक व्यक्ति का क्या दायित्व होना चाहिए, उन्होंने इसका बोध दे युग की समस्याओं को मिटाने की दृष्टि दी।

सर्वप्रथम, घर के प्रमुख दादा-दादी, माँ-पिता आदि व समाज के प्रमुख लोग, बच्चों को शिक्षित और प्रशिक्षित करें, दोहों, श्लोकों, कहानियों, घटनाओं, जीवन-वृत्तों, अपने जीवन के प्रेरक प्रसंगों को उन्हें सुनाएं, प्रेरित करें। इस हेतु प्रशिक्षण शिविरों का बहुत महत्व है। आचार्य तुलसी ने प्रेरित किया कि हमारी नयी पीढ़ी को अनेकविध तरीकों से शिक्षित-प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

दूसरा, यदि कोई स्खलना करे तो उसके प्रतिकार में देरी न करें, तत्काल अंगुली-निर्देश करें जिससे गलती आगे न बढ़े।

यदि हम स्वस्थ समाज, शांत-सहवास, आनन्दपूर्ण जीवन जीना चाहते हैं तो इन दोनों बातों पर हमारे घर प्रमुख, समाज प्रमुख, सरकारों के मुखिया, न्यायपालिकाएं आदि चिन्तन करें। इन शाश्वत मूल्यों को जानें, पढ़ें-पढ़ाएं और समाज में स्थापित करें।

तुलसी अणुव्रत सिंहनाद
अप्रतिम शीर्ष संवाद

लोकनायक जयप्रकाश नारायण

बौद्ध धर्मगुरु दलाई लामा

संत विनोबा भावे

आचार्य तुलसी : मेरे आकर्षण के केन्द्र

मोहनलाल जैन, संस्थापक, अणुविभा

बाल्यकाल से ही तुलसी मेरे आकर्षण के केन्द्र रहे। उनके दर्शन मात्र से ही मेरा मन पुलकित हो उठता। उनकी मंद-मंद मुस्कान मेरे तन-मन में उत्साह भर देती। बाल्यावस्था में बाल वैरागी के रूप में श्री तुलसी को मैंने बाल मुनि के रूप में देखा, किशोरावस्था व युवावस्था में मैं विद्रोही रहा तब मैंने श्री तुलसी को प्रगति पथ पर अग्रसर आचार्य तुलसी के रूप में देखा, प्रौढ़ावस्था में आचार्यश्री द्वारा चाहने पर समर्पित होकर मैंने उन्हें अणुव्रत अनुशास्ता के रूप में देखा और अब मैं उन्हें आचार्य पद विसर्जन के बाद मानव कल्याणार्थ महामानव के रूप में देख रहा हूँ। इस प्रकार मैंने उनको निकटता से भी देखा और दूरी से भी देखा, पर उन्होंने मुझे हर स्थिति में अपनी निकटता प्रदान की। यह उनकी अविस्मरणीय विशेषता है जो अन्यत्र मुझे देखने को नहीं मिली।

अणुव्रत अनुशास्ता श्री तुलसी में न तो कट्टरवादिता है, न लकीर की फकीरी है और न ही वे घेरे में हैं। वे अपने स्वनिर्मित व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व के धनी हैं। उनकी अपनी पहचान है जिसे पहचानने के लिए नीर-क्षीर विवेक चाहिए। वह जिसके पास जितना है, उतना उनको पहचानता है। उनके विशाल हृदय और व्यापक चिन्तन को समझने वाले, उनके निकट निरन्तर लगी रहने वाली श्रद्धालु भक्तों की भीड़ में भी कम ही होंगे। भक्तों की श्रद्धा की पहुँच उनके चरणों तक ही अधिक है पर उनके हृदय तक बहुत कम है। उनका स्वयं का यह अनुभव है कि मेरे निकट के श्रद्धालु भक्तजनों को मेरी शारीरिक पीड़ा की तो अनुभूति होती है, पर मेरे

हृदय की मानवतावादी पीड़ा की अनुभूति बहुत कम होती है। वास्तव में अगर वह होती तो आज अणुव्रत आन्दोलन सफलता के शिखर पर होता तथा वर्तमान सामाजिक एवं राष्ट्रीय समस्त समस्याओं का सार्थक समाधान साबित होता। यह एक तथ्य है कि अणुव्रत आन्दोलन का महत्व श्री तुलसी के निकट के लोगों ने उतना नहीं आँका जितना कि उनके दूर के लोगों ने आँका। काश! अणुव्रत आन्दोलन को उनके निकट श्रद्धालु भक्तजनों की भीड़ ने अपना लिया होता और उसकी सफलता के लिए तन-मन-धन से जुट गयी होती तो उसके सुपरिणाम वही आते; जो महात्मा गांधी के निकट के भक्तजनों की भीड़ के द्वारा स्वतंत्रता आंदोलन में तन-मन-धन से जुटने से आये। जब जागे तब सवेरा, आज भी उसकी सर्वाधिक आवश्यकता एवं उपयोगिता है।

अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित 'समाज भूषण' श्री मोहनभाई के ये विचार उनके स्मृति ग्रंथ 'कर्मयोगी की सृजन यात्रा' से लिये गये हैं।

"

अणुव्रत आन्दोलन का उद्देश्य नैतिक जागरण और जनसाधारण को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करना है। आज के युग में जबकि मानव अपनी भौतिक उन्नति से चकाचौंध होता दिखायी दे रहा है, और जीवन के नैतिक तथा आध्यात्मिक तत्त्वों की अवहेलना की आशंका है, ऐसे आन्दोलनों के द्वारा ही मानव अपने सन्तुलन को बनाये रख सकता है और भौतिकवाद के विनाशकारी परिणामों से बचने की आशा कर सकता है। अणुव्रत मानसिकता के परिवर्तन का प्रशस्त तरीका है। अणुव्रत आचार्य तुलसी द्वारा दिया गया एक ऐसा आंदोलन है जिसकी भारत को ही नहीं, विश्व को अपेक्षा है। मैं चाहता हूँ इसका बाहर भी प्रचार हो।

– **डॉ. राजेंद्र प्रसाद**, पूर्व राष्ट्रपति

"

पं. जवाहरलाल नेहरू से मुलाकात

14 नवम्बर 1951, देश के प्रधानमंत्री से मिलने का हमारा वह पहला प्रसंग था। प्रधानमंत्री अणुव्रत के असांप्रदायिक स्वरूप से बहुत प्रभावित हुए। प्रधानमंत्री ने अणुव्रत के कार्यक्रम को महत्व देते हुए कहा - ''समय मिलने पर मैं अणुव्रत का साहित्य पढूँगा। आपके साथ विचारों का सूत्र जुड़ा रहे, इस दृष्टि से मैं नन्दाजी से कहूँगा। उनकी इस विषय में रुचि है, वे आपके साथ सम्पर्क बनाये रखेंगे।'' अणुव्रत जैसे असाम्प्रदायिक और नैतिक कार्यक्रम को व्यापक और प्रभावी बनाने के लिए अपना महत्वपूर्ण सुझाव देते हुए प्रधानमंत्रीजी बोले - ''आचार्यजी! आप जो काम कर रहे हैं, बहुत अच्छा है। देश में और भी बहुत साधु हैं। आप उनके साथ मिलकर काम क्यों नहीं करते?'' प्रधानमंत्री का सुझाव सुन्दर था। देश के सब साधु-संन्यासी मिलकर एक मंच से कोई आवाज उठाएं तो उसमें बल आता है, किन्तु उस सुझाव की क्रियान्विति में संभावित कठिनाई की ओर इंगित करते हुए मैंने कहा- ''पण्डितजी! आपका चिन्तन सही है। हमें किसी के साथ मिलकर काम करने में कोई आपत्ति भी नहीं है, पर आप जानते हैं कि हम लोग पदयात्री हैं। हमारा कहीं कोई बैंक बैलेंस नहीं है। जिन सन्तों के साथ मिलकर काम करना है, वे मठाधीश हैं। उनके साथ हमारा तालमेल कैसे बैठ पाएगा?'' मेरी बात पूरी होने से पहले ही प्रधानमंत्री बोल उठे- ''हाँ, आपने बिल्कुल ठीक कहा। वे साधु पैसा रखते हैं, मोटरों में घूमते हैं और ठाटबाट से रहते हैं। उनके साथ काम नहीं हो सकेगा। आप अपना काम स्वतंत्र रूप से कीजिए।'' वार्तालाप समाप्ति के बिन्दु तक पहुँचा तो प्रधानमंत्री ने पूरी आत्मीयता के साथ कहा- ''आचार्यजी! आपसे मिलकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई।''

आचार्य तुलसी – बीसवीं सदी के महामानव

मोतीलाल एच. रांका
प्रथम अध्यक्ष, अणुविभा

विश्व में जितने भी महापुरुष हुए हैं, वे जन्म से महान नहीं थे। जो स्वार्थ से ऊपर उठकर परार्थ और परमार्थ के क्षेत्र में अपने जीवन का उत्सर्ग करते रहे, अपनी कर्मजा शक्ति को मानवोद्धार जैसे महत् कार्यों में सतत नियोजित करते हुए इस पुनीत लक्ष्य की अभिसिद्धि में जिन्होंने अपने जीवन को आहूत किया, वे ही आगे चलकर महामानव बने, जन-जन के लिए वन्दनीय बन गये। आचार्य तुलसी भी बीसवीं सदी के इसी कोटि के एक महामानव थे।

एक धर्माचार्य होने के नाते आपने यह निर्णय लिया कि हमें सार्वभौम स्तर पर, असाम्प्रदायिक भाव से जन समुदाय के पथ-दर्शन का कार्य हाथ में लेना चाहिए। और, तत्काल आपने भगवान महावीर से प्राप्त अणुव्रत शब्द को लोह-ग्राह रूप प्रदान कर एक मानवीय आचार संहिता का सृजन कर अणुबम के प्रतिपक्ष में, हिंसा से उत्पीड़ित एवं साम्प्रदायिकता के उन्माद से संश्लिष्ट मानव-मेदिनी में अध्यात्म के इस नये स्वर का शंखनाद किया। इस भव्य कार्यक्रम की न केवल देश की अपितु विदेश की पत्र-पत्रिकाओं ने भी मुक्त कंठ से सराहना की।

अणुव्रत के सात्विक विचार को जन-जन तक पहुँचाने हेतु तदनुरूप साहित्य का सृजन किया गया। श्री तुलसी ने स्वयं देश के प्रायः सभी भागों की पृथक्-पृथक् चरणों में यात्राएं कीं। अन्यून एक लाख किलोमीटर की पदयात्रा कर देश के बहुलांश भाग का आपने स्पर्श किया। आपके चरित्रमूलक प्रवचनों व प्रत्यक्ष सम्पर्क से भगवद्वाणी को सर्वत्र निनादित करने में आपका श्रम अहर्निश गतिमान

रहा। राष्ट्रपति भवन से लेकर एक गरीब की कुटिया तक आप पहुँचे। 600 से अधिक साधु-साध्वियों के समुदाय की शक्ति इस में नियोजित की गयी। परिणामस्वरूप अणुव्रत एक चरित्रमूलक राष्ट्रीय आन्दोलन के रूप में जाना जाने लगा। देश के वरिष्ठ चिंतकों, विचारकों, साहित्यकारों व लेखकों ने इसका अनुमोदन किया। लाखों सम्पर्क में आये तो हजारों लोग अणुव्रती बने।

अणुव्रत अनुशास्ता के सान्निध्य में अहिंसा एवं विश्व-मैत्री को प्रगाढ़ बनाने की दृष्टि से अणुव्रत विश्व भारती (अणुविभा) ने अनेक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन सफलतापूर्वक आयोजित किये हैं। इन सम्मेलनों में अन्तरराष्ट्रीय जगत के अहिंसा के क्षेत्र में कार्यरत संगठनों से सम्पर्क स्थापित हुआ। इन संस्थानों से जुड़े हुए अनेक प्रतिनिधि समुद्र पार के देशों से इन कॉन्फ्रेन्सों में सम्मिलित हुए हैं। इन अधिवेशनों में पारित घोषणा पत्रों को संयुक्त राष्ट्र संघ से मान्यता भी मिली है।

'समाज भूषण' व 'राजस्थान रत्न' अलंकरण से सम्मानित श्री मोतीभाई के ये विचार उनके स्मृति ग्रंथ 'मरुधर का मोती' से लिये गये हैं।

"

हमें अपने देश का मकान बनाना है तो उसकी बुनियाद गहरी होनी चाहिए। सबसे गहरी बुनियाद चरित्र की होती है। कितना अच्छा काम अणुव्रत आंदोलन में हो रहा है। इस काम में जितनी तरक्की हो, उतना ही अच्छा है। मैं चाहता हूँ अणुव्रत आंदोलन का जो काम हो रहा है, वह पूरी तरह से सफल हो।

– **पं. जवाहरलाल नेहरू**, पूर्व प्रधानमंत्री

"

अणुव्रत आंदोलन – राष्ट्रव्यापी शक्ति

देवेन्द्र कुमार कर्णावट, प्रथम कार्याध्यक्ष, अणुविभा

15 अगस्त सन् 1947 का वह नवप्रभात, जब एक ओर सदियों की पराधीनता के बन्धन टूट रहे थे। शहीदों का बलिदान और नेताओं की तपस्या साकार रूप ले रही थी। कोटि-कोटि व्यक्तियों के चेहरों पर खुशियाँ नाच रही थीं। सचमुच इतिहास का वह स्वर्णिम अवसर था। राजा, महाराजा, अमीर, उमराव और सदा-सदा गुलामी के आदी रहे लोगों ने कभी नहीं सोचा था कि ऐसा दिन भी आएगा। चहुँ ओर उल्लास का वातावरण प्रच्छादित हो रहा था। ऐसे समय राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का बलिदान भुलाया नहीं जा सकता, जिनकी बढ़ती हुई लोक शक्ति पर गोडसे ने प्रहार किया और उसकी गोली से बापू के प्राण-पखेरू उड़ गये। लेकिन जिस के लिए गांधी का बलिदान हुआ, चहुँ ओर हा-हा कार के साथ हिन्दू-मुस्लिम वर्ग में परस्पर मार-काट का दंगल शुरू हो गया। इस तरह चौंका देने वाली स्थिति और रुला देने वाली अमानवीय स्थिति को देखकर आचार्य श्री तुलसी का हृदय द्रवित हो उठा और ऐसी परिस्थितियों में उन्होंने तत्काल अपना कर्त्तव्य निश्चित किया। यहीं से अणुव्रत आन्दोलन का उद्भव हुआ।

इस आन्दोलन के जन्म के बाद सैकड़ों साधु-साध्वियों का यह कारवां क्या दक्षिण, क्या उत्तर, चहुँ ओर अणुव्रत के प्रचार-प्रसार में निकल पड़ा। चाहे, वह दिल्ली हो, चाहे बंगाल और चाहे मद्रास! सैकड़ों-हजारों मील की पदयात्रा से साधु-शक्ति ने गाँव-गाँव और शहर-शहर पाद-विहार कर आचार्य श्री तुलसी के नैतिक संदेश को जन-जन में गुंजित कर दिया। यह एक समां था, एक प्रज्वलन था, जिससे कि अणुव्रत आन्दोलन राष्ट्रव्यापी शक्ति का प्रतीक

बन गया। फिर वह अवसर भी आया, जब भारत की राजधानी दिल्ली में अणुव्रत आन्दोलन का प्रथम अधिवेशन समायोजित हुआ।

अणुव्रत आन्दोलन के प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी ने इस विशाल अधिवेशन को संबोधित करते हुए जब अहिंसक समाज संरचना में अणुव्रत ग्रहण करने के लिए जन-मेदिनी का आह्वान किया तो 600 से अधिक व्यक्तियों ने संकल्प ग्रहण कर लोगों को चकाचौंध कर दिया। फिर तो क्या था? सायंकाल को आकाशवाणी का स्वर एक छोर से दूसरे छोर तक फैल गया और दूसरे दिन का सूर्य सैकड़ों पत्र-पत्रिकाओं में नयी किरण और नयी अभिव्यंजना लिये प्रस्फुटित हुआ। समुद्र पार के प्रमुख पत्र भी नये क्रम की संभावना से बोल उठे। इस प्रकार हिन्दी, उर्दू, गुजराती, अंग्रेजी, तमिल, कन्नड़, पंजाबी, आसामी आदि सभी प्रदेशों के पत्रों ने अणुव्रत अभियान को प्रारम्भ से जिस चोटी तक पहुँचाया, उससे यह हिमालय से कन्याकुमारी तक चहुँओर लोक जीवन की लोक भाषा में गूँज उठा।

अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित 'समाज भूषण' श्री देवेंद्रभाई के ये विचार उनके स्मृति ग्रंथ 'मुखर पुरुषार्थ' से लिये गये हैं।

"हम ऐसे युग में रह रहे हैं, जब हमारा जीवात्मा सोया हुआ है, आत्मबल का अकाल और सुस्ती का राज्य है। हमारे युवक तेजी से भौतिकवाद की ओर झुकते चले जा रहे हैं। इस समय किसी भी ऐसे आंदोलन का स्वागत हो सकता है जो आत्मबल की ओर ले जाने वाला हो। इस समय हमारे देश में अणुव्रत आंदोलन ही एक ऐसा आंदोलन है, जो इस कार्य को कर रहा है। यह काम ऐसा है कि इसको सब तरफ से बढ़ावा मिलना चाहिए।"

– **डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन**, पूर्व राष्ट्रपति

एक करिश्माई संत

डॉ. सोहनलाल गांधी, जयपुर

'अणुव्रत गौरव' से सम्मानित, 'हाउस ऑफ कॉमन्स' लंदन में 'अहिंसा अवार्ड' से सम्मानित, अणुविभा के पूर्व अध्यक्ष

आचार्य तुलसी बीसवीं सदी के एक क्रांतिकारी एवं विचक्षण संत थे। अणुव्रत के रूप में नैतिक चेतना को विश्वव्यापी देखने की गुरुदेव की तड़प को मैंने नजदीक से अनुभव किया था। मैं अभी केन्द्रीय विद्यालय संगठन की नौकरी कर रहा था। अत: उनसे यदा-कदा ही मिल पाता। विदेशों में अणुव्रत की प्रस्तुति के लिए मैंने 'अणुव्रत इंटरनेशनल' की रूपरेखा तैयार की। गुरुदेव एवं मुनि नथमल जी ने उसे पढ़ा और मुझे आगे बढ़ने का संकेत दिया। इस बीच मोहन भाई के लिए एक और नया संगठन बना 'अणुव्रत भारती'। गुरुदेव के सुझाव पर इसमें 'विश्व' जोड़ दिया गया और अब वह अणुव्रत विश्व भारती बन गयी। उसका संक्षिप्त नाम 'अणुविभा' भी गुरुदेव के मुख से ही निकला। उन्होंने कहा - ''अणुव्रत इंटरनेशनल अणुव्रत विश्व भारती की ही एक स्वायत्त इकाई के रूप में काम करे। मोहन-सोहन दोनों मिलकर अणुव्रत का काम करें, मोती भाई दोनों के 'रक्षा कवच' अर्थात् अध्यक्ष बनें।'' गुरुदेव की दूर की सोच थी।

1987 की बात है, मोहनजी और मैं दिल्ली में गुरुदेव के दर्शन करने गये। उसके पहले प्रो. मुनि महेन्द्र जी के दर्शन किये और बातों-बातों में ही हमने उनसे कह दिया कि अणुविभा के तत्त्वावधान में लाडनूं में हम बड़ी इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस कर सकते हैं। सभी विदेशी और देशी मेहमान अपने खर्चे से आएंगे। गुरुदेव ने स्वीकृति दे दी। मैं हतप्रभ था लेकिन मोहनजी ने कहा - ''सोहन जी, चिंता मत करो। हम चुनौती का सफलतापूर्वक सामना करेंगे।''

दिल्ली वालों ने होटल कनिष्क में 70 कमरे बुक करा दिये। सभी को लिखा, आप सब 3 दिसम्बर सुबह तक दिल्ली पहुँच जाएं और सीधे होटल कनिष्क में पहुँचें। मैं भी मोहन भाई के सबसे छोटे पुत्र श्री संचय को साथ लेकर 2 दिसम्बर को दिल्ली पहुँच गया। मुझसे डेलीगेट्स की फ्लाइट डिटेल माँगी गयी जो मेरे पास नहीं थी। सभी ने पूछा, कितने लोग आ रहे हैं? मेरे पास कोई उत्तर नहीं था। सब नाराज हुए। फिर किसके लिए होटल बुक करा दिया? मैं निरुत्तर था और रात्रि 10 बजे सो गया। सुबह पाँच बजे जसवंत भाई आये - ''गांधी उठ, बधाई, सोते ही रहोगे क्या? अरे भाई 80-85 विदेशी आ चुके हैं।''

4 दिसम्बर को तीन बसों से हम सभी वाया जयपुर शाम को लाडनूं पहुँचे। पाँच दिसम्बर की सुबह मोतीभाई एवं मोहनभाई के साथ गुरुदेव एवं उस वक्त के युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के दर्शन किये। तीन दिन चला यह अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन एक ऐतिहासिक घटना बन गया। गुरुदेव ने तीसरे दिन सुबह मुझे याद कर बुलाया और कहा - ''बहुत-बहुत आशीर्वाद। तुमने तो धूम मचा दी।'' इससे बड़ा पुरस्कार मेरे लिए क्या हो सकता था।

"अच्छाई की शिक्षा बुरा आदमी नहीं दे सकता। साइंस आदि विषयों को कोई भी पढ़ा सकता है, पर नैतिकता का पाठ कोई नैतिक व्यक्ति ही पढ़ा सकता है। आचार्य श्री तुलसी मानवता के पुजारी हैं। उनका आंदोलन हृदय-परिवर्तन के माध्यम से काम करने वाला अभियान है। विचारों और अन्त:करण के परिवर्तन से जो नयी ऊर्जा और शक्ति जीवन में संप्रेषित होगी, वही वास्तव में अणुव्रत आंदोलन की उपलब्धि होगी।"

- **जाकिर हुसैन**, पूर्व राष्ट्रपति

अणुव्रत पाक्षिक से प्रारंभ हुई अक्षर यात्रा

डॉ. महेन्द्र कर्णावट, राजसमंद

'अणुव्रत गौरव' अलंकरण से सम्मानित,
पूर्व संपादक-अणुव्रत पत्रिका, पूर्व अध्यक्ष-अणुव्रत महासमिति

बाल्यकाल से ही मेरी अणुव्रत यात्रा आरंभ होती है जब मैं पिताश्री की अँगुली थामे उनके साथ अणुव्रत की बैठकों में जाता था। पिताश्री के संपादन में 1963 में 'अणुव्रत' पाक्षिक का प्रकाशन राजसमन्द से पुन: प्रारंभ हुआ। पिताश्री 'देवेन्द्र काका' प्राय: प्रवास पर रहते थे, अत: 'अणुव्रत' पाक्षिक की देखरेख एवं प्रूफ रीडिंग का कार्य युवा साहित्यकार कमर मेवाड़ी करते थे। वे जब भी आते, मैं उनके साथ हो जाता और 'अणुव्रत' के पृष्ठों को पढ़ता।

पूज्य तुलसीजी एवं पूज्य महाप्रज्ञजी का आत्मीय वात्सल्य 'काका' की तरह ही मुझे भी प्राप्त हुआ। नवम्बर 2002 में अकस्मात् मुझे निर्देश दिया गया कि 'अणुव्रत' पाक्षिक के संपादन का दायित्व सम्भालो। मैंने अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल एवं अणुव्रत महासमिति के तत्कालीन अध्यक्ष साहित्यकार डॉ. धर्मेन्द्रनाथ 'अमन' एवं महामंत्री विजयराज सुराणा से अनुरोध भरे स्वरों में कहा- ''मेरा हिन्दी-ज्ञान आधा-अधूरा है। मैं अणुव्रत पाक्षिक के संपादकीय दायित्व का निर्वाह कैसे कर पाऊँगा?'' तब मुनिश्री एवं डॉ. अमन बोले- ''धीरे-धीरे सीख जाओगे। अणुव्रत पाक्षिक के संस्थापक संपादक देवेन्द्र भाई का अनुभव और अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ का आशीर्वाद तुम्हारे साथ है। तुम क्यों चिन्ता करते हो?'' इस तरह अणुव्रत पाक्षिक के माध्यम से मेरी अक्षर यात्रा दिसम्बर 2002 में प्रारंभ हुई। आठ वर्ष और 10 माह की 'अणुव्रत' पाक्षिक की इस अक्षर यात्रा में बहुत पाया है,

सीखा है मैंने। पूज्यवरों के आशीर्वाद, लोककर्मियों एवं प्रबुद्धजनों की आत्मीयता से ही मेरी अणुव्रत की अक्षर यात्रा आज भी जारी है।

आचार्य तुलसी वास्तव में अपने काल के एक महान आत्मा थे, जिन्होंने समाज को कई नवाचारों से नवाजा। आचार्यश्री द्वारा यात्रा साधनों के प्रयोग से कम समय में अधिक लोगों तक पहुँचने के मेरे सवाल पर, उनके जवाब से मैं बहुत प्रभावित हुआ था। उन्होंने कहा- ''यह बिल्कुल सत्य है कि पैदल यात्रा अधिक समय लेती है और किसी तरह के वाहन के इस्तेमाल से आध्यात्मिक संदेश को अधिक स्थानों तक पहुँचाया जा सकता है। लेकिन यदि मैं इस माध्यम को चुनता हूँ तो छोटे-छोटे गाँवों तक कौन पहुँच पाएगा? छोटे गाँव उपेक्षित ही रह जाएंगे और इन गाँवों के रहवासी हमारे संदेश से मिलने वाले उनके जीवन के उत्थान के मार्ग की जानकारी ही प्राप्त नहीं कर पाएंगे। इस प्रकार गाँवों की स्थिति में कभी सुधार ही नहीं आ पाएगा। वस्तुत: गाँवों और शहरों दोनों के उत्थान से ही देश का विकास हो सकेगा।''
दूसरा बिंदू, जिसने मुझे आचार्यश्री की ओर आकर्षित किया, वह था सफल और स्थिर नेतृत्व के उनके द्वारा बताये गये गुण - करिश्माई प्रस्तुति, वाक्पटुता और दृढ़ इच्छाशक्ति हो, सामयिक महत्व को सोचने व समझने की दृष्टि हो, सत्यनिष्ठा हो, तीक्ष्ण निर्णयकर्त्ता हो, विचार प्रक्रिया में खुलापन, साहस व करुणा से ओतप्रोत हो, समस्याओं का बेहतर समाधान करने वाला हो, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, टीम वर्क हो।

- डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, पूर्व राष्ट्रपति

तुलसी अणुव्रत काव्य-सुधा

अणुव्रत विश्व में साकार हो

लय : प्रेम से बोलें कि प्यारे

युग-युगांतर की समस्या का स्वयं उपचार हो,
शीघ्र अपरिग्रह अणुव्रत विश्व में साकार हो।।

अर्थ की गुत्थी अजब उलझी कि जग उलझा हुआ,
फूल की कोमल-कली मुरझी कि अलि मुरझा हुआ,
सही प्रत्युत्तर परिग्रह-वृत्ति का प्रतिकार हो।।

अर्थ का पंजीकरण ही, स्पष्ट पूँजीवाद है,
व्यक्तिगत हो राष्ट्रगत, उन्माद का संवाद है,
चोट संग्रह-वृत्ति पर, उसकी करारी हार हो।।

लालसा सीमित बने, पहले स्वयं सीमित बनो,
सादगी फैशन-परस्ती से परे परिमित बनो,
त्यागमय जीवन जरूरी प्रबल यह संस्कार हो।।

स्वल्प-संग्रह स्वल्प-व्यय, हो चाह का सीमाकरण,
हो न शोषण और का, बस यही अपना आचरण,
स्वावलम्बन का सृजन, जीवन न जग में भार हो।।

लोभ का संवरण ही है सहज सुख की साधना,
सरस उपनय कपिल के आदर्श की आराधना,
धर्म, ईश्वर नाम पर तुलसी न धन का वार हो।।

जन-जन के उन्नायक आचार्य तुलसी

अर्जुनराम मेघवाल, दिल्ली
संयोजक-अणुव्रत संसदीय मंच, केन्द्रीय कानून व न्याय मंत्री

तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य तुलसी युगपुरुष थे। उन्हें अणुव्रत जैसे युगधर्म के प्रवर्तन के लिए युगों-युगों तक याद रखा जाएगा। आचार्य तुलसी को जब मैं याद करता हूँ तो मेरी स्मृति अपने बाल्यकाल में चली जाती है। मैं उन दिनों कक्षा पाँचवीं में पढ़ता था। एक दिन हमें स्कूल के चौक में इकट्ठा किया गया। बताया गया कि आज स्कूल में कोई खास मेहमान आने वाले हैं। हमने देखा कि एकदम सफेद कपड़े पहने कई लोग स्कूल में प्रवेश कर रहे हैं। उनके मुँह पर भी सफेद पट्टी लगी थी। उनमें से एक मंच पर रखे लकड़ी के तख्त पर बैठ गये और बाकी सब उनके आसपास नीचे ही कपड़ा बिछा कर बैठ गये। मुझे पता चला कि जो मंच पर बैठे थे, वही आचार्य तुलसी जी थे।

उस दिन पहली बार मेरा परिचय आचार्य तुलसी और अणुव्रत आंदोलन से हुआ था। आचार्य तुलसी ने हमें छोटे-छोटे नियम लेने को कहा था। नकल नहीं करने और नशा नहीं करने के नियम भी उसमें शामिल थे। उन्होंने स्वयं एक गीत गाया था जो आज अणुव्रत गीत के नाम से प्रसिद्ध है। उस दिन को याद करता हूँ तो आचार्य तुलसी की वो बुलंद आवाज आज भी मेरे कानों में गूँजने लगती है।

आचार्य तुलसी और अणुव्रत के साथ बना वह संबंध समय के साथ और भी मजबूत बनता चला गया। जब आचार्य तुलसी के आशीर्वाद से बीकानेर संभाग में संस्कार निर्माण समिति ने गाँव-गाँव में छुआछूत और शराब के खिलाफ मुहिम छेड़ी तो उससे भी जुड़ने का मुझे अवसर मिला।

दलित व पिछड़े समाज को आगे लाने, सर्वसमाज में उन्हें सम्मान दिलाने और उनके जीवन को संवारने के लिए आचार्य तुलसी ने अथक प्रयास किये। इस बात की कल्पना से ही मन रोमांचित हो जाता है कि उन्होंने अपने धर्मसंघ के सबसे महत्वपूर्ण आयोजन - मर्यादा महोत्सव के दिन हरिजन सम्मेलन का आयोजन किया। आज से 50 वर्ष पूर्व विशाल जैन समुदाय के मध्य पाँच हजार दलित समाज की उपस्थिति निश्चय ही एक क्रांतिकारी कदम था। उस आयोजन ने छुआछूत की जंजीरों को एक झटके में तोड़ डाला था।

आचार्य श्री तुलसी द्वारा प्रतिपादित अणुव्रत के सिद्धांतों का मेरी राजनीतिक व प्रशासनिक सेवाओं में विशेष योगदान रहा। सार्वजनिक जीवन में शुचितापूर्ण आचरण व सद्व्यवहार की प्रेरणा ने प्रशासनिक सेवाओं के माध्यम से जनसेवा करने की यात्रा को नये सकारात्मक आयाम दिये।

अणुव्रत विश्व भारती

की एक अभिनव पहल

अणुव्रत पत्रिका

ई-संस्करण

नि:शुल्क पत्रिका प्राप्त करने के लिए दिये गये व्हाट्सएप के चिह्न का स्पर्श कर अपना संदेश हमें भेज सकते हैं।

पत्रिका नियमित भेजने के लिए आपका मोबाइल नंबर हमारी सूची में स्वचलित रूप से पंजीकृत हो जाएगा।

राजस्थान विधानसभा में अणुव्रत प्रस्ताव

31 जनवरी, 1968, जयपुर से संवाद मिला कि राजस्थान विधानसभा में 'अणुव्रत प्रस्ताव' पारित हो गया। उसके साथ ही प्रस्ताव की प्रस्तुति और उसके पारित होने की प्रक्रिया के बारे में संक्षिप्त जानकारी भी प्राप्त हुई।

बहस में राजस्थान विधानसभा का वातावरण अणुव्रतमय बन गया। अणुव्रत के समर्थन में बोलने वाले वक्ताओं की उत्सुकता देख मुख्यमंत्री श्री सुखाड़िया ने इस विषय को आगामी सत्र तक चालू रखने का सुझाव दिया। अध्यक्ष ने मुख्यमंत्री के सुझाव पर सदन में राय माँगी। श्री शेखावत ने सदन का समय आधा घंटा बढ़ाकर उसी समय प्रस्ताव को पारित करने की बात पर बल दिया। सदन की स्वीकृति से अध्यक्ष श्री निरंजननाथ आचार्य ने कार्रवाई आगे बढ़ायी।

अणुव्रत प्रस्ताव पर हुई चर्चा के अन्त में सदन के नेता मुख्यमंत्री श्री सुखाड़िया ने कहा – ''अणुव्रत आन्दोलन न तो पूँजीवाद का समर्थक है और न ही किसी धर्मविशेष का प्रचारक। इसके पीछे कोई उद्देश्य है तो यही कि व्यक्ति निर्दोष हो, समाज निर्दोष हो और राष्ट्र का नैतिक धरातल ऊपर उठे। अणुव्रत में हमारी संस्कृति प्रतिबिम्बित है। इसमें सभी धर्मों के आधारभूत तत्त्व प्रतिबिम्बित हैं।''

मुख्यमंत्री महोदय ने अणुव्रत प्रस्ताव पर गंभीरता से विमर्श करके उसका संशोधित रूप सदन में प्रस्तुत किया, जो इस प्रकार है – सदन आचार्य श्री तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत अभियान की सराहना करता है।

विधानसभा में अणुव्रत प्रस्ताव पारित होने से राजस्थान में उसकी गूँज हो गयी। अणुव्रत द्वारा राष्ट्रीय चरित्र के उन्नयन का हमारा संकल्प पुष्ट हुआ। अणुव्रती कार्यकर्ताओं के मन में यह विश्वास जागा कि अणुव्रत नैतिक मूल्यों का संवाहक बनकर लोकजीवन को प्रभावित करेगा।

विश्वव्यापी बनी अणुव्रत की गूँज

तेजकरण सुराणा, दिल्ली
प्रबन्ध न्यासी-अणुविभा, पूर्व अध्यक्ष-अणुविभा

आचार्य तुलसी ने समाज के नवनिर्माण का संकल्प लेकर अपनी कल्पनाओं से, अपनी क्षमता से समाज को नये-नये आयाम दिये हैं। उन्होंने अनेक अवदानों में त्रस्त मानवता को अणुव्रत के नाम से जो एक आंदोलन दिया, आज उसकी गूँज विश्वव्यापी बन चुकी है। वे अपनी धर्मसभाओं में अणुव्रती कार्यकर्ताओं के योगदान की खुलकर प्रशंसा करते थे। इससे कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ता था।

मुझे याद है, आचार्य तुलसी चूरू शहर से बाहर त्रिलोक बाल विहार में विराज रहे थे। आचार्य तुलसी द्वारा लिखित ऐतिहासिक पुस्तक 'अग्नि परीक्षा' पर प्रारंभ हुआ वैचारिक मतभेद हिंसा में परिवर्तित हो गया। आचार्य तुलसी के काफिले पर धूल फेंकी गयी, पत्थर फेंके गये। अनेक लोग घायल हुए। मैं भी बचाव में लगा हुआ था। अचानक जोरों से आवाज सुनी - ''शहर चलो, इनके पांडाल को आग लगाएंगे।'' सुनकर मैं स्तब्ध रह गया। बिना समय गंवाये भागकर जहाँ पांडाल बना हुआ था, वहाँ पहुँचा। बगल की एक ऊँची हवेली में कुछ युवाओं और घर के छोटे बच्चों को साथ लेकर छत पर चढ़ गया। सभी को कहा, नीचे घर के दालान में पत्थर पड़े हुए हैं, उन्हें सभी मिलकर छत पर ले आओ।

जैसे ही आंदोलनकारियों का जत्था पांडाल के पास पहुँचा, हम छत से पांडाल के टिन की बनी छत पर पत्थर फेंकने लगे। टिन पर पत्थर फेंकने की आवाज खूब जोरों से हुई, आंदोलनकारी घबरा गये, आगे नहीं बढ़ पाये। मात्र वहाँ

खड़े नारे लगाते रहे। कुछ समय पश्चात् पुलिस मौके पर पहुँच गयी और पांडाल ध्वस्त होने से बच गया। सारी घटना की जानकारी जब आचार्यश्री के पास पहुँची तो मुझे उनकी वात्सल्य भरी आँखों से ढेरों आशीर्वाद मिला। उन्होंने आशीर्वाद स्वरूप कहा - ''यह वीर बालक है।'' आज भी उस समय का गुरुदेव का चेहरा याद आ जाता है तो शरीर का रोम-रोम खिल उठता है।

मुझे आचार्यप्रवर के चूरू प्रवेश में होने वाले स्वागत कार्यक्रम के संयोजन का दायित्व दिया गया था, लेकिन परिस्थितिवश वह आयोजन नहीं हो पाया। मैं वापस दिल्ली रवाना होना चाहता था क्योंकि कुछ समय पूर्व ही मैंने अपना नया व्यवसाय दिल्ली में प्रारंभ किया था। पीछे कोई संभालने वाला था नहीं। मैंने गुरुदेव से मंगल पाठ सुनाने के लिए निवेदन किया, लेकिन मुझे मंगल पाठ नहीं सुनाया गया। उस समय मुझे जो आशीर्वचन सुनने का अवसर मिला, वह मेरे जीवन की अमूल्य धरोहर है। उसे मैं वर्णन कर उस विशालता को थोड़े में समाहित नहीं कर सकता। उसके पश्चात् मुझे लगभग 40 दिन चूरू में गुरु-सान्निध्य में रहकर सेवा का अवसर मिला और फिर जो मंगल पाठ सुनाया, उसे सुनकर मैं धन्य हो गया।

हमसे जुड़ने के लिए
नीचे दिये गये चिह्न पर क्लिक करें

अणुबम बनाम अणुव्रत

डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम', जयपुर

अणुव्रत लेखक सम्मान से सम्मानित
पूर्व संयोजक - अणुव्रत लेखक मंच

अणुव्रत आन्दोलन के प्रवर्तक आचार्य तुलसी एक महान युग-संत थे। उनका व्यक्तित्व, कर्तृत्व और कृतित्व सभी विशेषणों से परे है। ऐसे युग पुरुष प्रकृत्या 'यथास्थिति' की जड़ता की चूलें हिला देने में विश्वास रखते हैं। वे व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और विश्व के लोकमंगल के लिए 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के वितान तले लोक कल्याणकारी युग का निर्माण करते हैं।

मैं लम्बे अरसे से अणुव्रत आन्दोलन से जुड़ा हुआ हूँ। आचार्य श्री तुलसी के दर्शन मैंने लाडनूं परिसर में कई बार किये थे, पर उनसे व्यक्तिगत संवाद का अवसर कभी नहीं मिल पाया। पर परोक्ष रूप से उनके प्रवचनों के माध्यम से, उनके द्वारा रचित साहित्य के अनुशीलन से मैं उन्हें जान सका। उनके बहुआयामी विराट व्यक्तित्व की भास्वरता का अनुभव कर सका।

मैंने उन्हें कायिक स्वरूप में देखा, पर उनके प्रवचनों, गीतों, लेखों और अनेक उद्‌बोधनों के माध्यम से उन्हें भीतर से अधिक देखा। उनके द्वारा प्रवर्तित, कीर्तिशेष आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा पोषित व प्रशस्त तथा वर्तमान आचार्य श्री महाश्रमण की अगुआई में पूर्ण आस्था और सक्रियता से चल रहे अणुव्रत आन्दोलन में मैं आचार्य तुलसी को अब भी देख रहा हूँ। अणुव्रत के ग्यारह व्रतों से व्यक्ति और समाज में सकारात्मक बदलाव आ रहा है। जीवन विज्ञान और प्रेक्षाध्यान के अभ्यास से चेतना उद्‌बुद्ध हो रही है। अशांत विश्व में अहिंसा के परचम को पहचान मिल रही है। न केवल अपने ही देश में अपितु विदेशों में भी

अणुव्रत आन्दोलन जारी है। आचार्यश्री द्वारा 'अणुव्रत आन्दोलन' का बोया बीज अब एक वटवृक्ष बन चुका है। 'अणुबम' की वहशी चुनौती का सामना 'अणुव्रत' ही कर सकता है, और वही कर रहा है।

आचार्य तुलसी में मुझे जो एक बात अधिक प्रभावित करती है, वह है कि वे जन्मना एक आदर्श शिक्षक थे। 'संयमः खलु जीवनम्' का सूत्र उनके प्रत्येक कार्य को बाँधता है। वे किसी भी व्यक्ति की धार्मिकता को स्वीकार नहीं करते जब तक कि उसमें नैतिकता न हो।

मौजूदा शिक्षा प्रणाली में एक खामी है कि उसमें विद्यार्थी के भावात्मक विकास की उपेक्षा की गयी है। यही कारण है कि शिक्षा के उपरान्त भी वह परिवार, समाज, राष्ट्र और समस्त विश्व से जुड़ नहीं पाता। उसका 'भावात्मक' पक्ष उपेक्षित रहता है। आचार्यश्री ने विद्यार्थी के शारीरिक, बौद्धिक विकास के साथ भावात्मक और आध्यात्मिक विकास को भी शिक्षा का अत्यावश्यक अंग माना। उनके अनुसार शिक्षा अर्थकारी हो, पर चरित्र निर्मात्री भी होनी चाहिए।

अणुविभा का महत्वपूर्ण मासिक प्रकाशन

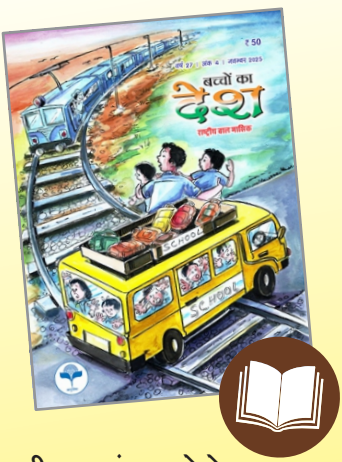

नवीनतम अंक पढ़ने के लिए पुस्तक के चिह्न पर क्लिक करें..

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

अब बढ़े हुए पृष्ठों के साथ!

हिन्दी के साथ-साथ अब बच्चों को पढ़ने को मिलेगी अंग्रेजी भाषा में भी कहानियाँ।

तुलसी विचार आज भी प्रासंगिक

राजेन्द्र बोड़ा, जयपुर
गांधीवादी चिंतक और पत्रकार

आचार्य तुलसी अखिल भारतीय स्तर के एक ऐसे धर्म प्रमुख थे जिनकी जैन समुदाय की सीमाओं से कहीं आगे तक पहुँच थी। उनका अणुव्रत आंदोलन किसी धर्म विशेष तक सीमित नहीं था, बल्कि यह सभी धर्मों के अनुयायियों के लिए था। वे जन-जन तक धर्म की व्यावहारिकता और मानवता का संदेश पहुँचाने में आजीवन लगे रहे।

हमें 1980 और 1990 के दशक में देश की प्रमुख न्यूज एजेंसी प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया (पीटीआई) के प्रतिनिधि के रूप में अनेक बार उनसे मिलने का मौका मिला। हर चर्चा में आचार्य तुलसी का मानना होता था कि धर्म का मूल उद्देश्य मनुष्य को मानवीय मूल्यों से जोड़ना है, न कि उसे विभाजित करना।

एक बार एक प्रेसवार्ता में उनके साथ तिब्बत के बौद्ध धर्मगुरु दलाई लामा भी बैठे थे। दोनों धर्मगुरुओं ने अपने-अपने तरीके से धर्म की व्याख्या की, मगर दोनों इस मत के थे कि सभी धर्मों का मर्म एक ही है। हमने पत्रकार के नाते सवाल पूछ लिया कि यदि सभी धर्मों का मर्म एक ही है तो फिर ''आपके वस्त्र सफेद और आपके साथ बैठे दलाई लामा के वस्त्र भगवा क्यूं हैं?'' उस दिन मिला जवाब आज भी हमें धर्म को समझने की एक नयी दृष्टि देता है। आचार्य तुलसी ने कहा कि सभी धर्म मनुष्य को एक अच्छा इंसान बनाने के लिए तैयार करते हैं। सभी धर्मों का एक ही उद्देश्य होता है कि उनके अनुयायी बुराइयों से बचें, नेक कर्म करें, सबसे प्रेम करें, हिंसा का त्याग करें तथा एक-दूसरे की मदद करें। अपने व्यवहार में धार्मिकता लाएं।

बड़े लोग किस प्रकार बुद्धि के धरातल पर एक-सा ऊँचा सोच रखते हैं, यह भी उस दिन महसूस हुआ। अपनी बात समाप्त करते हुए आचार्य तुलसी ने अपने पास बैठे दलाई लामा को हाथ से हल्का से इशारा किया और दलाई लामा ने उनकी बात को यह कहते हुए पूरा किया कि दुनिया में भाँति-भाँति के मनुष्य होते हैं। सब एक-से नहीं होते। एक तरह से की गयी बात, संभव है सबको समझ में न आये। भिन्न-भिन्न धर्म अपने-अपने तरीके से बात करते हैं। मगर सबके मूल में यही होता है कि प्रत्येक मानव एक अच्छा इंसान बने। इसलिए बहुत-से धर्मों की जरूरत है ताकि लोग अपनी-अपनी समझ के धर्मों से जुड़ सकें और अच्छे इंसान बन सकें। आचार्य तुलसी ने समाज को यह समझाया कि किसी भी धर्म का सार मनुष्य को उत्तम बनाने में है, न कि दूसरों को छोटा सिद्ध करने में।

“

पेड़ की जड़ें जितनी गहरी और मजबूत होंगी, उसकी शाखाएं भी उतनी ही बड़ी और हरी-भरी होंगी। पेड़ होने से ही प्राकृतिक संपदा और पर्यावरण का संरक्षण संभव होगा। आचार्य तुलसी ने ऐसा ही काम किया। उन्होंने समाज की जड़ें मजबूत करने में अपना बहुमूल्य समय भी दिया, योगदान भी। ऐसे कार्य ही एक व्यक्ति को युगप्रवर्तक बनाते हैं। ऐसे थे आचार्य तुलसी। एक मानव पहले निज को पहचाने, निज को बनाये, तभी समाज बनेगा। मानव निर्माण की उनकी सोच, मार्ग और कार्य हमेशा याद रहेगा।

– **सुन्दरलाल बहुगुणा**, पर्यावरणविद्

”

20वीं सदी के युगपुरुष

जसबीर सिंह, जयपुर
पूर्व अध्यक्ष - राजस्थान अल्पसंख्यक आयोग

अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक युगप्रधान आचार्य गणाधिपति तुलसी ने अध्यात्म की ऊँचाइयों को तो छुआ ही, 20वीं सदी के भारत में नैतिक क्रान्ति के पुरोधा व शान्ति के अग्रदूत के रूप में भी अपनी महती भूमिका को प्रभावी ढंग से निभाया। अणुव्रत आन्दोलन के माध्यम से उन्होंने हमें बताया कि छोटे-छोटे व्रतों व संकल्पों को अपने जीवन में उतारकर हम अपने जीवन में क्रान्तिकारी व सकारात्मक बदलाव कर सकते हैं जिससे न केवल हमारा व्यक्तिगत जीवन पल्लवित व सुगंधित होता है वरन् समाज के लिए भी उपयोगी व सार्थक बनता है।

अणुव्रत एक नैतिक आचार संहिता है जो जाति, लिंग, भाषा, वर्ण, सम्प्रदाय आदि के भेद-विभेद से ऊपर उठकर व्यक्ति व समाज के कल्याण व विकास को लक्षित करती है। हमें यह स्मरण रखना होगा कि अणुव्रत आंदोलन सिर्फ तेरापंथ के लिए न होकर सर्व पंथ के लिए उपयोगी है।

अणुव्रत से जुड़े नारी समाज से शील व सादगी की, व्यापारियों से ईमानदारी व प्रामाणिकता की, पूँजीपतियों से करूणा व विसर्जन की, सरकारी अधिकारियों व कर्मचारियों से सेवा व त्याग की, नेताओं से सिद्धान्त निष्ठा व मर्यादा की तथा धार्मिक समूहों से सहिष्णुता व समन्वय की अपेक्षा की जाती है। इस नैतिक अभियान की मशाल को थाम कर गणाधिपति तुलसी ने लगभग एक लाख किलोमीटर की पदयात्रा की। उनके अणुव्रत अभियान की स्वीकार्यता का यह प्रमाण है कि राजस्थान विधानसभा ने अणुव्रत प्रस्ताव पारित किया तथा उत्तरप्रदेश विधानसभा ने सर्वसम्मति से अणुव्रत आन्दोलन की प्रशंसा की।

ऐसे थे आचार्य तुलसी

डॉ. बसंतीलाल बाबेल, लावा सरदारगढ़

अणुव्रत गौरव से सम्मानित
पूर्व न्यायाधीश एवं शासन उप सचिव गृह (विधि)

आचार्य श्री तुलसी तेरापंथ धर्मसंघ के एक देदीप्यमान नक्षत्र थे। पराक्रमी आचार्य थे। मुझे उनका भरपूर सान्निध्य एवं आशीर्वाद मिला। उनसे जुड़े मेरे अनेक प्रसंग हैं। एक प्रसंग सन् 1992-93 के आसपास का है। मैं जयपुर में मजिस्ट्रेट था। जयपुर में अणुव्रत विश्व भारती के भवन का निर्माण कराया जाना था। संसाधन सब उपलब्ध थे, लेकिन नगर निगम की अनुमति नहीं मिल रही थी। अधिकारी अणुव्रत को एक साम्प्रदायिक मिशन मान रहे थे। उन दिनों आचार्य श्री तुलसी का जयपुर में प्रवास था। एक दिन आचार्य श्री तुलसी के समक्ष इसी बात की चर्चा चल रही थी। सागरमल बरड़िया आदि समाज के अनेक वरिष्ठजन वहाँ मौजूद थे। उन्होंने आचार्यश्री के सामने अपनी समस्या रखी।

आचार्यश्री ने फरमाया - ''क्या इस सम्बन्ध में आपने बाबेलजी से बात की?'' उन्होंने कहा, ''नहीं।'' आचार्यश्री ने फरमाया, ''बाबेलजी को याद करो।'' मध्याह्न लगभग 3 बजे मेरे पास फोन आया। मैं आधे दिन का अवकाश लेकर आचार्यश्री की सेवा में पहुँच गया। आचार्यश्री ने फरमाया- ''बाबेलजी, इनकी बात सुनें। यह काम करना है।'' मैंने कहा- ''पूज्यवर, यदि आपका आशीर्वाद रहा तो यह काम यथाशीघ्र हो जाएगा।''

नगर निगम में विधि सलाहकार हमारी न्यायिक सेवा के व्यक्ति हुआ करते थे। सायंकाल मैं 'अणुव्रत' की पुस्तिका लेकर उनके पास पहुँच गया और उनसे निवेदन किया कि

आप इस पुस्तिका को पढ़ लीजिए। यदि इसमें कहीं पर भी किसी धर्म विशेष का उल्लेख हो तो आप हमारा आवेदन निरस्त कर देना। उन्होंने उस पुस्तिका को पढ़ा तथा दूसरे दिन नगर निगम के कार्यालय में बुलाया और कहा कि धर्म विशेष का तो कहीं उल्लेख नहीं है। मैंने कहा, ''सर, अणुव्रत का मिशन मानव मात्र के लिए है, मात्र जैन अथवा तेरापंथ के लिए नहीं। हाँ, इसके प्रवर्तक जरूर तेरापंथ के आचार्य श्री तुलसी हैं।'' नगर निगम से अनुमति मिल गयी और काम बन गया। ऐसे थे आचार्य श्री तुलसी।

यह प्रसंग सन् 1987-88 के आसपास का है। मेरे बड़े पिताजी का स्वर्गवास हो गया था। उस समय आचार्य श्री तुलसी उदयपुर विराज रहे थे। हम उनके दर्शनार्थ उदयपुर पहुँचे। मैंने कहा - ''पूज्यवर, मेरे बड़े पिताजी का स्वर्गवास हो गया है।''

आचार्यश्री ने तत्काल कहा - ''गंगाजी गये या नहीं?'' मैंने कहा - ''पूज्यवर, हम गंगाजी ही तो आये हैं। पूज्यप्रवर के चरणों में ही हमारी गंगा है।'' आचार्यश्री को यह सुनकर आत्मिक प्रसन्नता हुई और उन्होंने कहा, ''बाबेलजी, मैं यही उत्तर सुनना चाहता था।'' ऐसे थे आचार्य श्री तुलसी।

आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन के द्वारा अपने अनुयायियों और जनता को व्यसन मुक्त कर सच्चरित्र व त्यागी बनाने का प्रशंसनीय प्रयत्न प्रारम्भ किया है। उनका कार्य सुसम्बद्ध और एक सूत्र से चलता है, यह मुझे बहुत ही अच्छा लगा। आचार्य श्री तुलसी के उपदेशों से व अणुव्रतों की साधना से जनता को काफी लाभ होता है।

- **राष्ट्रसंत श्रीतुकड़ोजी**, आध्यात्मिक गुरु

प्रामाणिकता को जिंदा रखना

गौतम चौरड़िया, रायपुर
पूर्व न्यायाधीश - छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय,
अध्यक्ष - छत्तीसगढ़ राज्य उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग

मैं अपने विद्यार्थी जीवन में धर्म और धार्मिक संतों को नहीं मानता था, अपितु उनका विरोध करता था। मेरा चयन वर्ष 1987 में न्यायाधीश के पद पर हुआ, तब उस बड़ी जिम्मेदारी को कैसे निभाऊँगा, यह सोचकर एक महान संत आचार्य श्री तुलसी, जो उस समय दिल्ली में थे, के दर्शनार्थ गया। मेरे मन में बहुत उथल-पुथल थी। मैंने संत आचार्य श्री तुलसी से एक प्रश्न किया, ''मैं न्यायाधीश के पद की शपथ लेने जा रहा हूँ, मेरा धर्म क्या है? सामान्यत: संतों के संपर्क में आने पर कर्मकाण्ड, पूजा-जप-तप की प्रेरणा की बातें सुनता रहा हूँ।''

आचार्यश्री ने मेरे प्रश्न का जो उत्तर दिया, वह मेरे हृदय की गहराइयों में तीर की तरह उतर गया। उन्होंने मुझसे कहा, ''तुम्हें और कुछ धर्म-साधना, कर्मकाण्ड करने की जरूरत नहीं है। तुम न्यायाधीश के पद पर जा रहे हो, बस अपनी इस पवित्र कुर्सी की प्रामाणिकता को जिंदा रखना और ईमानदारी से काम करना, यही तुम्हारा धर्म है।''

मैं जो अब तक धर्म का विरोध करता था, इस युगीन धर्म के उत्तर से मुझे एक प्रेरणा मिली और मैं संत आचार्य श्री तुलसी के प्रति नतमस्तक होकर प्रामाणिकता के सूत्र को मंत्र की भाँति अपने हृदय में स्थापित कर ईमानदारी की देवी की पूजा करने लगा। कर्मकांडों में किसी को शांति मिलती है या नहीं? मुझे नहीं मालूम। आचार्य श्री तुलसी द्वारा दिये गये युगीन धर्म की नयी परिभाषा से, यदि चाहे वह हिंदू हो, मुस्लिम हो, सिख हो, ईसाई हो, बौद्ध हो या

जैन हो या नास्तिक ही क्यों न हो, ईमानदारी की परिभाषा को धर्म के रूप में स्थापित कर ले तो इस संसार को सुखी बनने में देर नहीं लगेगी और यह हमारी स्वयं, जनता-जनार्दन और अपने देश के प्रति सच्ची सेवा होगी।

मैं यथासंभव अपने जीवन में संत आचार्य श्री तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत - ईमानदारी, युगीन धर्म की परिभाषा के साथ जीवन जीने लगा और न्यायाधीश के संवैधानिक पद तक पहुँचा। जीवन में सही राह पर चलने पर कठिनाइयां आना अस्वाभाविक नहीं हैं। बुराई की राह भी कौन-सी आसान है! वहाँ पर दु:ख और कठिनाइयों के अंबार हैं।

संत आचार्य श्री तुलसी की 111वीं जयंती की परिसंपन्नता के इस विशेष अवसर पर उस महान पुरुष को मैं याद किये बिना नहीं रह सकता जिसने मेरे जीवन को युगीन धर्म, प्रामाणिकता, ईमानदारी, सहजता और सरलता से भर दिया। ''सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:'' का यह मूल मंत्र तब ज्यादा अच्छे से साकार हो सकेगा, जब हमारे हृदय में चाहे हम किसी भी धर्म को मानते हों, प्रामाणिकता और ईमानदारी की महान देवी की पूजा-प्रतिष्ठा व्यावहारिक जीवन में फलीभूत हो सकेगी।

“

धर्म का काम है सोये हुए व्यक्ति को जगाना। जागने का अर्थ है, जीवन को सही दिशा की ओर ले जाना। इसके लिए हमें अपने पर नियंत्रण करना होगा। आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत के द्वारा जीवन-निर्माण की बात कही है। अणुव्रत और सर्वोदय दो नाम हैं, मगर विचारधारा में समान हैं।

- **शिवाजी नरहरि भावे**, प्रसिद्ध सर्वोदयी कार्यकर्ता

”

संसद भवन में सांसदों के बीच

19 दिसम्बर, 1974 को साढ़े बारह बजे संसद भवन में संसद सदस्यों के बीच एक विशेष कार्यक्रम आयोजित था। उसकी अध्यक्षता लोकसभा अध्यक्ष श्री गुरुदयालसिंह ढिल्लो ने की। मेरे वक्तव्य का सारांश यहाँ प्रस्तुत है –

"समूची मनुष्य जाति अभी निर्णय नहीं कर पायी है कि वह शान्ति चाहती है या और कुछ। यदि सही अर्थ में वह शान्ति की इच्छुक है तो उसे समता का मार्ग अपनाना होगा। व्यक्ति-व्यक्ति का जीवन रूपान्तरित हो, उसमें करुणा और समता का भाव जागे, आक्रामक आकांक्षाएं मिटें, तभी व्यक्तिगत शान्ति संभव है। व्यक्तिगत शान्ति ही विश्व शान्ति की संभावना को उजागर करती है। अणुव्रत व्यक्ति के जीवन के रूपान्तरण का उद्‌बोधन है। मैं मानता हूँ कि विचार-परिवर्तन के बिना कोई भी परिवर्तन होता है, वह व्यक्ति को शान्ति की दिशा में नहीं ले जाता। व्यक्ति के हृदय-परिवर्तन की गति धीमी होती है, इसलिए आज के द्रुतगामी युग में उस ओर हमारा ध्यान कम जाता है। भारत का सांस्कृतिक और आध्यात्मिक धरातल बहुत उन्नत है। उस धरातल पर रहकर हमने अहिंसा को गति दी और उसका जीवन के हर क्षेत्र में प्रयोग किया तो मुझे विश्वास है कि विश्व शान्ति के क्षेत्र में भारत का महत्वपूर्ण योगदान हो सकेगा और विश्व सरकार जैसे दूरगामी संकल्प की दिशा में भी एक कदम आगे बढ़ जाएगा।"

पार्लियामेण्ट की गरमागरम बहस में संभागी बनने वाले सांसदों ने जिस शान्ति और शालीनता के साथ हमें सुना, उन्हें देखकर कल्पना भी नहीं की जा सकती है कि वे लोग कभी आपे से बाहर भी हो सकते हैं। संसद भवन का वह विशाल कक्ष आध्यात्मिक चर्चा का कक्ष बन गया।

हर सवाल का जवाब थे आचार्य श्री तुलसी

आनंद भारती, मुम्बई
चिंतक एवं पत्रकार

वह समय था (1969-70) जब अखबारों के छपे हुए शब्दों से गुजरते हुए मैं खुद से एक सवाल किया करता था कि क्या ऐसा कोई है जो इन भयावह शब्दों को सुसंस्कृत रूप दे सके? क्या ऐसा कोई चरित्र है जो मनुष्यता और इस दुनिया को संवार सके? चूँकि अनुभवों की मेरी दुनिया बहुत छोटी थी, इसलिए जवाब की तलाश आधी-अधूरी रह जाती।

एक दिन अचानक पूर्णिया जंक्शन के पास धरमचंद जी रांका के घर से सफेद कपड़ों और मुँह पर पत्ती लगाये कुछ स्त्रियों को निकलते देखा। मालूम हुआ कि ये जैन भिक्षुणियाँ हैं जो राजस्थान से आयी हैं। ये आचार्य श्री तुलसी के अणुव्रत आन्दोलन का प्रचार कर रही हैं। नैतिकता इस आन्दोलन का मुख्य बिंदु है। मैं 'अणुव्रत आन्दोलन' को लेकर कल्पनाएँ करने लगा। फिर अगले ही पल आश्वस्त भी हुआ कि जिन सवालों के जवाब ढूंढ़ रहा हूँ, वह खुद जवाब बनकर सामने आ गया है।

कॉलेज में पढ़ाई के दौरान कमल पुगलिया से मित्रता कायम हुई। एक दिन वे मुझे किशनगंज में विराजे मुनिश्री पूनमचंद जी के दर्शन कराने ले गये। हर सुबह और शाम तब आचार्य श्री तुलसी रचित एक गीत गाने का मौका मिलता था, 'नैतिकता की सुर सरिता में जन-जन मन पावन हो' इस गीत को लेकर जब सोचने बैठा तो मेरे सारे सवालों का जवाब मिलने लगा, जिसकी तलाश में वर्षों से भटक रहा था।

उसी समय आचार्यश्री की जो छवि मन में कायम हुई, वह आज तक मौजूद है। यह मेरे जीवन का टर्निंग पॉइंट था, खुद में रूपांतरण महसूस करने लगा। यह समझ बनी कि आचार्य भिक्षु प्रणीत तेरापंथ धर्मसंघ की नींव कितनी मजबूत है और इसके नौवें आचार्य श्री तुलसी ने कैसे समय के साथ जोड़ते हुए इसे विश्व-रूप दे दिया है।

आचार्य श्री तुलसी का प्रथम साक्षात दर्शन दिल्ली में हुआ जब पटना विश्वविद्यालय से एम. ए. की पढ़ाई के बाद नौकरी की तलाश में गया था। संयोग से 1981 में मेरी शुरुआत 'अणुव्रत पाक्षिक' से हुई। तब उसके संपादक थे देवेंद्र कर्णावट। यह अलग बात है कि वहाँ कुछ ही महीने रह पाया। 1981 में आचार्य श्री तुलसी का चतुर्मास अणुव्रत भवन, दिल्ली में था या वे लम्बे समय तक विराजे थे। मेरा प्रतिदिन का जाना शुरू हो गया था। हर चतुर्मास में भी जाने लगा। 'साप्ताहिक पांचजन्य' के लिए लिया आचार्य श्री तुलसी का इंटरव्यू मेरे जीवन का एक यादगार इंटरव्यू बन गया। मेरी बातचीत का विषय 'नैतिकता' ही था।

उन्होंने कहा था, ''आजादी के समय से ही मेरे मन में यह विचार पनप रहा था कि सैकड़ों वर्षों से विदेशी दासता से मुक्त भारत को अपने नवनिर्माण के लिए एक विशेष वातावरण की अपेक्षा है। आदमी ईमानदार, सच्चरित्र, कर्त्तव्यपरायण और नैतिक बने, अणुव्रत आंदोलन में इसकी पूरी व्यवस्था की गयी।'' बिहार-नेपाल के अणुव्रत आन्दोलन में शामिल होकर मैंने भी इसे गहराई के साथ महसूस किया था।

अणुव्रत आंदोलन हृदय-परिवर्तन का अभियान है जो आज भी जारी है। आज के अराजक माहौल में आचार्य श्री तुलसी के विचारों को एक बार फिर हर जगह ले जाने की जरूरत आ पड़ी है।

अणुव्रत-रोशनी सबमें जगाइए

लय : मोहन ! हमारे मधुवन में

यह जिंदगी इंसान की, मत यों गंवाइए,
इंसानियत की शान को अब तो बचाइए,
हाँ कुछ कर दिखलाइए।

खुश-किस्मती से है मिली इंसानी-जिंदगी,
आने न इसमें दो बुराई की तुम गंदगी।
पाबंदगी अपने उसूलों पर रख पाइए।।

अफसोस एशो-इशरत में कितने तुम मस्त हो?
हा! जुल्म करने में बने क्यों इतने व्यस्त हो?
उफ! फूल में काँटों को ज्यादा मत बढ़ाइए।।

कितने बनाते हो कहो कागज के कायदे?
हो खुद कहाँ करते अमल जो खुद के वायदे?
बेकायदे इज्जत न मिट्टी में मिलाइए।।

इस फानी दौलत पर तुम्हें बेकार नाज है,
बनती-बिगड़ती, रोजमर्रा का रिवाज है,
किसके टिके हैं ताज? अंदाजा लगाइए।।

खुद की रुहानी ताकतें खुद से आजाद हो,
इंसानियत आबाद हो ऐसा जिहाद हो,
तुलसी अणुव्रत-रोशनी सबमें जगाइए।।

...वह तुलसी होता है

इकराम राजस्थानी, जयपुर
अणुव्रत लेखक पुरस्कार से सम्मानित

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य तुलसी ने इस युग को एक ऐसा वरदान, एक अनोखा शस्त्र और एक अद्भुत विचार दिया है जिसने एटम बम के सामने अपना अस्तित्व सारी मानवता के सामने रखा है। सोचकर ही एक अनुभूति होती है कि हम अणुबम का मुकाबला अणुव्रत से कर सकते हैं। ऐसे शांति, अहिंसा और प्रेम के मार्ग को प्रशस्त करने वाले संत के दर्शन और उनसे व्यक्तिगत रूप से बात करने का अवसर मुझे प्राप्त हुआ है। यह मेरे जीवन का एक स्वर्णिम अवसर था जब सन् 1995-96 में उनके जन्मदिवस पर प्रमुख वक्ता के रूप में मुझे लाडनूं आमंत्रित किया गया था।

वहाँ आचार्य तुलसी का भव्य और दिव्य व्यक्तित्व दमकता हुआ दिखायी दिया। मैंने मंच पर जाकर जब संत महिमा से अपना व्याख्यान प्रारंभ किया, उस समय सारा पांडाल शांत था। मुझे याद है, जब मैंने उनकी ओर देखकर पढ़ा -

तात मिले, पुनि मात मिले, सुत भ्रात मिले एते सुखदाई।
राज मिले, गज बाज मिले, सब साज मिले, मन इच्छित पाई।।
लोक मिले, विधि लोक मिले, देव लोक मिले, बैकुंठ पठाई।
या जग में सबहि मिल जाये, पर संत समागम दुर्लभ भाई।।

इस सवैया को पढ़ते ही पांडाल में ओम् अर्हम् के स्वर वातावरण में तैरने लगे। आचार्य श्री तुलसी ने दोनों हाथ उठाकर इस भाव को पसंद किया और सारे पांडाल में साधु-साध्वियों तथा हजारों की तादाद में भक्तों और श्रद्धालुओं ने भी हाथ हिलाये। ऐसा प्रतीत हुआ, हजारों सूर्य एक साथ उदित हो लाडनूं की पावन धरती को आलोकित कर रहे हों।

आचार्य तुलसी जैसे महान संत सदियों में इस संसार में आते हैं। आचार्यश्री को इस अवसर पर मेरी लेखनी का यह नमन –

दुर्गम पथ पर सदा चढ़े जो, वह तुलसी होता है।
मन से मन का भाव पढ़े जो, वह तुलसी होता है।।
जिस वाणी में अरिहंत का ज्ञान प्रवाहित होता है।
तौल-तौल कर शब्द गढ़े जो, वह तुलसी होता है।।
महावीर जिस मन में बोले, वह तुलसी होता है।
ज्ञान चक्षु जो घट के खोले, वह तुलसी होता है।।
जिसके चरण चिह्न पर यह, संसार सदा चलता है।
समय तुला पर जग को तौले, वह तुलसी होता है।।

“

आचार्य तुलसी अहिंसा के हिमायती थे। उनका ऐसा विचार था कि अहिंसा को बढ़ावा देकर ही हम विश्व शांति की कल्पना को साकार कर सकते हैं। आचार्य तुलसी का जीवन एक तपस्वी का जीवन था। वे सामान्य व्यक्ति से लेकर अखिल विश्व तक का कल्याण चाहते थे। वे इस बात पर बार-बार बल देते थे कि जीवन में धर्म की चेतना जगने से हमारा मन और चरित्र शुद्ध होगा। वे इसे प्राथमिकता देते थे। वे धार्मिक क्रियाओं और धार्मिक गतिविधियों को दूसरे वर्ग में रखते थे। उनका यह सर्वोत्कृष्ट विचार था, जिसकी जानकारी मैं समय-समय पर अपने बौद्ध साथियों और अनुयायियों को देता रहा हूँ। धर्म के प्रति हमारा यह लक्ष्य जन-जन के लिए जानने योग्य है।

– **दलाई लामा**, बौद्ध धर्मगुरु

”

अन्तर्मन में आया खयाल सच हो सकता है!

अजय चौपड़ा, जयपुर

पूर्व संपादक - अणुव्रत पत्रिका
मुख्य संपादक - तुलसी स्मृति ग्रंथ

जब धरमचंद चौपड़ा 'अणुव्रत' पाक्षिक पत्रिका के संपादक थे और उनके संपादकीय का इंतजार सभी पाठक किया करते थे, उसी दौरान मेरा परिचय 'अणुव्रत' पाक्षिक पत्रिका से हुआ ही था। फरवरी 1997 में धरमचंद चौपड़ा का स्वर्गवास हो गया। संवेदनाओं से भरा जब मैं उन्हें देख रहा था तो मेरे अन्दर से एक सोच निकला - मैं भी कभी लिखूँगा जबकि उससे पहले मुझे कभी लिखने का अनुभव नहीं था।

7-8 दिन बाद 'अणुव्रत' पाक्षिक के सह संपादक ललित गर्ग मुझसे मिलने गंगाशहर आये। उन्होंने मुझे इंगित किया कि आचार्य श्री तुलसी कुछ ऐसा सोच रहे हैं कि क्यों नहीं अजय चौपड़ा को इस पत्रिका का सम्पादक बनाएं। बड़ी अचरज की बात थी, अन्तर्मन में आया कोई खयाल कभी सच हो सकता है? ऐसा होता है, पर बहुत कम।

5 मार्च 1997 को हम सभी आचार्यश्री के दर्शन करने लाडनूं पहुँचे। प्रवचन पश्चात् पारिवारिक सेवा के दौरान आचार्यश्री ने मुझे कहा, ''तुम्हें अणुव्रत पत्रिका का संपादक बनना है।''

मैंनें आचार्यश्री को कहा, ''मैंने यह काम कभी किया नहीं है। मैं नहीं कर पाऊँगा क्योंकि कि यह काम कठिन है।''

तपाक से आचार्य श्री तुलसी का जवाब आया, ''तुम्हें जीवन में कभी कोई सरल काम करना ही नहीं है।'' वह

क्या कह गये! मैं समझ पाता, उससे पहले तो उन्होंने मुझे मंगल पाठ सुना दिया।

शनैः शनैः कदम-कदम करते मैं जब लिखने लगा, तीन साल निकले तो मैं रोज उन्हें याद करता था। मैं आज भी यह मानता हूँ कि मैं जो भी लिख पाता हूँ और कुछ लोगों तक पहुँच पाता हूँ तो उसके पीछे आशीर्वाद किसी और से ज्यादा आचार्य तुलसी का ही है।

“

हमारे लिए यह सौभाग्य की बात है कि आज आचार्य तुलसी जैसी विभूति हमारा पथ-प्रदर्शन कर रही है। वे मानवता की प्रतिष्ठापना द्वारा समता, सहिष्णुता स्थापित करना चाहते हैं। हमारे आदर्श की ओर बढ़ने के लिए आचार्य तुलसी ने बहुत सुन्दर आदर्श रखा है। आचार्य तुलसी जी से वार्तालाप करने पर उनके उच्च उद्देश्यों की झलक मिली। उनका कहना है कि जब सारी हिंसक शक्तियां एकत्रित हो सकती हैं, तब अहिंसक शक्तियां भी एक हो सकती हैं और सबके सामूहिक प्रयास और प्रयत्न से अवश्य ही अहिंसक समाज की कल्पना पूरी हो सकेगी। सबको मिलकर काम करने में शीघ्र सफलता मिलेगी। अणुव्रत आंदोलन असाम्प्रदायिक और सार्वभौम है। आचार्य श्री तुलसी के नेतृत्व में जो मंगलकारी कार्य हो रहा है, उसके साथ मैं तन्मय हूँ और मेरी जो कुछ भी शक्ति है, उसे इस पुण्य कार्य में लगाने को तत्पर हूँ।

– **जयप्रकाश नारायण**, ‘संपूर्ण क्रांति’ के प्रणेता

”

जीवन ही संदेश है

डॉ. कुमारपाल देसाई, अहमदाबाद
पद्मश्री व अणुव्रत लेखक पुरस्कार से सम्मानित

आचार्य श्री तुलसी ने पूरे विश्व को अणुव्रत से लेकर अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकान्त की परिभाषा सिखायी। आपने श्रमण संस्कृति में श्रम का महत्व, मानव जीवन में मूल्यों की परिभाषा, सामाजिक परिवर्तन में होने वाले अधिक खर्च पर प्रहार कर दो वक्त के भोजन के अभाव में जीने वाले समाज की ओर दृष्टि टिकायी जिससे उनके जीवन में परिवर्तन संभव हो सका। आपने वैश्विक चेतना के जागरण का प्रयोग किया और उसके चार आयाम दिये - सामाजिक जागृति, धार्मिक जागृति, आध्यात्मिक जागृति और मानवीय चेतना जागृति।

अणुव्रत की मूल जड़ों में मनुष्य को सच्चा मनुष्य बनाने की और मानवता को उजागर करने की बात मुख्य थी। साथ ही व्यावहारिकता, सामाजिकता और आध्यात्मिकता को उचित दिशा-दर्शन देना था। प्रासंगिक प्रवचनों में मैंने आचार्य तुलसी की मानवता भरी दृष्टि देखी है। अपने श्रोताओं की पसंद का व्याख्यान न देकर आप जीवन जीने की कला की बात करते, वर्तमान स्थिति पर ग्लानि का अनुभव भी करते, आवश्यकता होने पर कटु सत्य भी कहते।

आपने जीवन विज्ञान और प्रेक्षाध्यान के माध्यम से मानस परिवर्तन के नये अध्याय का सृजन किया। गरीब को करोड़पति बनाया जा सकता है परंतु करोड़पति को सदाचारी नहीं बनाया जा सकता। इसलिए जीवन में शुद्धि, हृदय में भक्ति, व्यवहार में मैत्री की बात कही। आचार्यश्री धर्म के माध्यम से जोड़ने में विश्वास करते थे न कि तोड़ने में। वे धर्म और अध्यात्म द्वारा पृथ्वी ग्रह पर संपूर्ण मानव जाति को और अधिक संस्कारी बनकर जीवन जीने का संदेश देते थे।

अणुव्रत : विवेक का विज्ञान

फारूक आफरीदी, जयपुर
अणुव्रत लेखक पुरस्कार से सम्मानित

आचार्य तुलसी के अहिंसक दर्शन ने विश्वभर में शांति और स्थायित्व के चिंतकों के बीच सम्मान पाया। मैं जोधपुर से प्रकाशित दैनिक जनगण, दैनिक जलते दीप और दैनिक तरुण राजस्थान का समय-समय पर संपादक रहा तो उनके चतुर्मास कार्यक्रमों और उनके व्याख्यानों के प्रेस कवरेज के बहाने इस महान संत के साक्षात दर्शन करने और उनसे साक्षात्कार करने का मुझे सौभाग्य मिला।

जैसा मैंने देखा, आचार्य तुलसी धर्मगुरु से अधिक नैतिक मूल्यों के पथप्रदर्शक लगे। मुझे उनमें और गांधीजी में समानता दिखलायी पड़ती थी। उनका मौन भी संवाद था। उन्होंने कहा, ''धर्म का सार आत्म-संयम और परहित है।'' अणुव्रत आंदोलन का लक्ष्य किसी धर्म का प्रचार नहीं, बल्कि धर्म के मूल तत्त्वों का सार्वभौमीकरण था। अणुव्रत व्यक्ति को आत्मशुद्धि की ओर ले जाते हैं और समाज को हिंसा, भ्रष्टाचार और असत्य से मुक्त करते हैं। वे गांधी के सत्याग्रह और बुद्ध के मध्यम मार्ग के समकालीन व्याख्याकार थे। उन्होंने दोनों को जोड़ा- 'नैतिकता के व्यावहारिक प्रयोग' के रूप में। अणुव्रत आंदोलन ने न केवल भारत बल्कि दुनिया के मानवतावादी राष्ट्रों में शिक्षा, राजनीति और सामाजिक जीवन को प्रभावित किया।

आज जब वैश्विक समाज कृत्रिम बुद्धिमत्ता और भोग संस्कृति की गति में खोया है, अणुव्रत की यह चेतावनी और भी प्रासंगिक हो गयी है ''विज्ञान से पहले विवेक चाहिए, प्रगति से पहले संयम।'' संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों - शांति, न्याय, लैंगिक समानता और टिकाऊ समाज - का नैतिक आधार अणुव्रत विचार में निहित है।

गुरु आशीर्वाद और फलश्रुति

प्रतापसिंह दुगड़, कोलकाता
अध्यक्ष - अणुविभा

आचार्य श्री तुलसी की जन्मस्थली लाडनूं थी। इस दृष्टि से लाडनूं का निवासी होना मुझे हमेशा गौरव की अनुभूति देता रहा है। बचपन की बात है। लाडनूं के पुराने ठिकाने में दादाजी मुझे गुरुदेव के दर्शन कराने ले गये थे। गुरुदेव ने मेरे माथे पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया और कहा कि कुछ सीखना-चितारना अभी से शुरू कर दो। गुरुदेव की यह पहली सीख मेरे जीवन को सदैव रोशन करती रही है।

मेरे नानाजी लाडनूं में अस्वस्थ थे। आचार्य तुलसी जैन विश्व भारती में विराज रहे थे। मेरी उम्र 15-16 वर्ष की रही होगी। मैंने गुरुदेव के दर्शन कर उन्हें नानाजी की अस्वस्थता की जानकारी दी और नानाजी को दर्शन देने के लिए गुरुदेव से घर पधारने का निवेदन किया। गुरुदेव ने कहा, ''ठीक है, दर्शन देने संत आ जाएंगे।'' नियमों से अनभिज्ञ मैं एक और निवेदन कर बैठा- ''गुरुदेव! आप स्वयं पधारने की कृपा करें।'' दो दिन बाद गुरुदेव स्वयं नानाजी को दर्शन देने पधार गये। कितने कृपालु थे गुरुदेव! संयोग से 2-3 दिन बाद ही नानाजी का देहांत हो गया। पूरा परिवार गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता के भाव से भर गया था।

गुरु की कृपा कैसे व्यक्ति और परिवार को धन्य कर देती है, इसका कितना सकारात्मक प्रभाव जीवन पर पड़ता है, यह उस समय शायद इतना अनुभव न भी हो, लेकिन आज जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ तो गुरु-आशीर्वाद के महत्व को साफ-साफ देख पाता हूँ। धर्मसंघ और अणुव्रत आंदोलन से अपने जुड़ाव को मैं गुरु-आशीर्वाद का ही प्रतिफल मानता हूँ और मेरी सफलता का भी यही आधार है।

अणुव्रत भारती - एक नया उपक्रम

30 दिसम्बर 1982 को (उच्च माध्यमिक) विद्यालय से विहार कर देवेन्द्रजी के गांधी सेवा सदन में गये। वहाँ तीन दिन रहे। साधना शिखर के निकट अणुव्रत भारती का शिलान्यास किया गया। उस अवसर पर मैंने कहा- ''शिखर तक पहुँचने वाले व्यक्तियों का जीवन प्रायोगिक होना चाहिए। यहाँ से अणुव्रत और प्रेक्षाध्यान की जो आवाज उठेगी, उसका प्रभाव होगा, ऐसा विश्वास है।'' अणुव्रत भारती का शिलान्यास जहाँ हुआ है, उस पर्वतीय स्थल की रमणीयता देखने योग्य है। भारतीय संस्कार निर्माण समिति के संयोजक मोहनजी जैन (सरदारशहर) ने अपना जीवन अणुव्रत भारती के लिए समर्पित कर दिया। उनकी लगन और कार्यनिष्ठा को देखते हुए अणुव्रत भारती का दायित्व उन्हें ही सौंप दिया गया।

अणुविभा को आशीर्वाद

राजनगर में साधना और संस्कार-निर्माण के दो विशिष्ट केन्द्र हैं- तुलसी साधना शिखर व अणुव्रत विश्व भारती। 23 अप्रैल 1986 को वहाँ पत्रकार सम्मेलन का आयोजन था। पत्रकारों को अणुव्रत और प्रेक्षाध्यान की विशद जानकारी देने के बाद अणुविभा के सन्दर्भ में मैंने कहा- ''अणुव्रत विश्व भारती भावी पीढ़ी के संस्कार-निर्माण की प्रयोगशाला बन रही है। उसमें आदर्श परिवार, गाँव और नगर के चित्र आलेखित करने की कल्पना संजोयी गयी है। इन सबकी पृष्ठभूमि में अणुव्रत के आदर्शों को व्यवहार के धरातल पर उतारने का अनथक प्रयत्न किया गया है। जब यह कार्य विकास की दिशा में आगे बढ़ेगा तो बड़ की भाँति विशाल होगा। इस कार्य में अनेक व्यक्ति जुड़े हुए हैं। उन्हें सबका सहयोग भी मिल रहा है।''

अणुव्रत पत्रिका एक सिंहावलोकन

संचय जैन, उदयपुर
संपादक - 'अणुव्रत' व 'बच्चों का देश' पत्रिका
पूर्व अध्यक्ष - अणुविभा

15 अक्टूबर 1955 को 'अणुव्रत' पाक्षिक के रूप में अणुव्रत आंदोलन को अपना मुखपत्र मिला। अणुव्रत पत्रिका के 70 वर्ष के इतिहास पर नजर डालने पर कुछ तथ्य सामने आते हैं। लगभग 57 वर्ष तक पाक्षिक पत्रिका के रूप में इसका प्रकाशन हुआ, अर्थात् प्रतिमाह दो अंक। जनवरी 2013 से यह मासिक पत्रिका के रूप में परिवर्तित हो गयी। पत्रिका के आकार, लेआउट व पृष्ठ संख्या में भी अनेक बदलाव हुए। पत्रिका का प्रकाशन अलग-अलग समय में दिल्ली, कोलकाता और राजसमंद से भी हुआ।

'अणुव्रत के महारथी' श्री देवेंद्र कुमार कर्णावट 'अणुव्रत' पत्रिका के प्रथम संपादक थे। अलग-अलग कालखंड में वे संभवत: सबसे लंबे कार्यकाल तक संपादक रहे। द्वितीय संपादक के रूप में श्री सत्यनारायण मिश्र का कार्यकाल 1958 में प्रारंभ होकर अगस्त 1959 तक रहा। डॉ. छगनलाल शास्त्री सितंबर 1959 में संपादक बने। आने वाले वर्षों में श्री मुद्राराक्षस, श्री रामेश्वर अशांत और श्री रिषभदास रांका 'अणुव्रत' पत्रिका के संपादक रहे।

प्रारम्भिक वर्षों में श्री जयचंदलाल जी दफ्तरी इसके आधार स्तम्भ बने रहे। इसके प्रकाशन में सर्वश्री मोहनलाल कठोतिया, हर्षचंद्र जैन, बालचंद जैन, लादूलाल आच्छा, विजयराज सुराणा, निर्मल कुमार सुराणा, जसवंतराय जैन, कन्हैयालाल फूलफगर के योगदान को भी भूला नहीं जा सकता।

1976 में श्री कमलेश चतुर्वेदी के संपादन में अणुव्रत आंदोलन की रजत जयंती पर विशेषांक प्रकाशित हुआ। इन वर्षों में पत्रिका के सुचारु संचालन के लिए संपादक मण्डल का उल्लेख मिलता है जिसमें अलग-अलग समय में सर्वश्री जयसुखलाल हाथी, डॉ. आत्माराम, अक्षय कुमार जैन, मोतीलाल एच रांका, एल. एल. आच्छा, पारस जैन और देवेंद्र कुमार कर्णावट के नाम शामिल हैं। इसी दौरान आचार्य दिवाकर भी पत्रिका के संपादक रहे।

अस्सी के दशक के प्रारम्भिक वर्षों में प्रसिद्ध साहित्यकार श्री यशपाल जैन ने संपादकीय परामर्शदाता की भूमिका में 'अणुव्रत' पत्रिका को समृद्ध किया। आपके मार्गदर्शन में संपादक/कार्यकारी संपादक के रूप में श्री शुभकरण सुराणा और श्री महावीर दत्त गिरि ने सक्रिय भूमिका निभायी। इसी कालखंड के आसपास डॉ. बुधमल शामसुखा भी संपादक रहे।

1987 में श्री धरमचन्द चौपड़ा ने संपादक के रूप में 'अणुव्रत' पत्रिका की लोकप्रियता को नये आयाम दिये। उनके संपादकीय काफी लोकप्रिय हुए। सह-संपादक के रूप में श्री ललित गर्ग ने दिल्ली ऑफिस में पत्रिका के कार्य को व्यवस्थित करने में अहम भूमिका निभायी। श्री धर्मचन्द चौपड़ा के असामयिक निधन के बाद संपादकीय दायित्व 1997 में श्री अजय चौपड़ा के कंधों पर आ गया।

नवभारत टाइम्स के संपादक रह चुके वरिष्ठ पत्रकार श्री विनोद कुमार मिश्र ने सन् 2000 से 2002 तक 'अणुव्रत' पत्रिका का संपादकीय दायित्व संभाला। 2003 में 'अणुव्रत गौरव' डॉ. महेन्द्र कर्णावट 'अणुव्रत' के संपादक बने और 2011 तक इस दायित्व से जुड़े रहे। 2012 में संपादक का दायित्व श्री महेन्द्र जैन के कंधों पर आया। 2012 से 2017 के इस कार्यकाल में सह-संपादक के रूप में डॉ. उषा गोयल का सहयोग प्राप्त हुआ। श्री अजय शर्मा का 'अणुव्रत' पत्रिका के संपादक के रूप में संक्षिप्त कार्यकाल रहा। तत्पश्चात् श्री अशोक संचेती ने अणुव्रत

महासमिति के अध्यक्ष रहते हुए 2018 में 'अणुव्रत' पत्रिका का संपादकीय कार्यभार संभाला।

2020 में अणुव्रत महासमिति के अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के साथ एकीकरण के साथ ही 'अणुव्रत' पत्रिका के प्रकाशन का दायित्व अब अणुविभा पर आ गया। 1 जनवरी 2021 से मैं 'अणुव्रत' पत्रिका का संपादकीय दायित्व निभा रहा हूँ। सह-संपादक के रूप में भाई मोहन मंगलम का साथ व सहयोग निरंतर बना हुआ है।

समय की माँग को सम्मान देते हुए हमने 2023 से अणुव्रत पत्रिका को ई-मैगजीन के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयोग किया। 'अणुव्रत अमृत महोत्सव वर्ष' के प्रारंभ से शुरू हुआ यह क्रम आज भी जारी है। इसमें मूल पत्रिका का महत्वपूर्ण हिस्सा मोबाइल-फ्रेंडली प्रारूप में डिजाइन किया जाता है। यह ई-मैगजीन व्हाट्सएप समूहों के माध्यम से 30 हजार से भी अधिक लोगों तक प्रतिमाह पहुँच रही है।

पाँच वर्षीय इस संपादकीय कार्यकाल में मैंने अणुव्रत के मूल्यों को सर्वोपरि रखने का प्रयास किया है। सादगी को बहुमान देते हुए 2022 के उत्तरार्ध से इसे श्वेत-श्याम पत्रिका का रूप दिया गया जिसे अणुव्रत प्रेमी लोगों ने पसंद किया। प्रत्येक माह एक विचारोत्तेजक मुद्दे पर आयोजित परिचर्चा में सैकड़ों पाठकों की सहभागिता पाठक-वर्ग से जुड़ाव का एक विनम्र प्रयास रहा है।

पाठक-वर्ग को अणुव्रत के रचनात्मक पक्ष और अणुव्रत आंदोलन के गौरवशाली इतिहास से जोड़ने की दृष्टि से समय-समय पर अनेक प्रयोग-प्रयास किये जाते रहे हैं। देश-विदेश में प्रतिमाह आयोजित अणुव्रत कार्यक्रमों की रिपोर्ट इस पत्रिका को जीवंतता प्रदान करती है। निश्चय ही यह पत्रिका अणुव्रत दर्शन, अणुव्रत गतिविधि, अणुव्रत विचार और अणुव्रत इतिहास को अपने में समेटे एक मूल्यवान दस्तावेज है जो वर्तमान में तो उपयोगी है ही, भविष्य की भी थाती है।

पाठक मन्तव्य

अनुपम 'अणुव्रत' पत्रिका

अनुपम 'अणुव्रत' पत्रिका, देकर हितकर ज्ञान।
रखती है सबसे सदा, एक अलग पहचान।।
ध्यान लगाकर जो इसे, पढ़ लेगा इक बार।
निश्चित उसकी वृत्ति में, होगा सहज सुधार।।
डिगने पाएगा नहीं, पाठक का शुभ ध्येय।
मिलता जाएगा उसे, उत्तम पथ-पाथेय।।
अणुव्रत करता जा रहा, अनुदिन ही उत्थान।
परिवर्तित उसने किया, सबका आज रुझान।।
अणुव्रत के द्वारा खिली, होठों पर मुस्कान।
देश-विदेशों में तभी, प्राप्त हुआ सम्मान।।
सबका 'अणुव्रत' पत्रिका, कर देगी उद्धार।
कभी न पाठक-वर्ग की, हो पाएगी हार।।

– **डॉ. विष्णु शास्त्री 'सरल'**, चम्पावत

सात दशक का सफर !

सत्तर साल यानी आठ सौ चालीस माह। अंक ऐसे जिनकी रचना सामग्री पहले से नवीन हो, आधुनिक हो। नियमित पाठक को पढ़ते हुए पिसा हुआ आटा दोबारा न परोसा जाये। रचना सामग्री ऐसी कि पत्रिका के पाठक बने रहें। पत्रिका की सदस्यता बढ़ती-बनती रहे। सदस्यता के साथ-साथ पाठक में संवेदनशीलता के साथ सौन्दर्यबोध

भी बचा रहे। मनुष्यता बची रहे। रचना-सामग्री ऐसी जो महज मनोरंजन का साधन न हो।

जी हाँ। मैं 'अणुव्रत' पत्रिका की ही बात कर रहा हूँ। मैं लंबे समय से 'अणुव्रत' का नियमित पाठक हूँ। कुछ प्रयासों से पुराने अंक उपलब्ध हुए। हतप्रभ हूँ। रचना सामग्री का चयन। वर्ष और माह पर दृष्टि डालता हूँ तो पाता हूँ कि कमोबेश हर अंक समय के साथ कदम बढ़ाता हुआ पाठकों तक पहुँचाया जाता है।

हिन्दी भाषी राज्यों के परिवारों में बातों-मुलाकातों, किस्सों-कहानियों के साथ वाचिक परम्परा का तौर आज भी है। 'अणुव्रत' ने इसे खूब समझा है। हर अंक में बच्चों को सुनाने लायक किस्से, प्रेरक प्रसंग और आदर्श वाक्य शामिल रहे हैं। कहीं न कहीं पढ़ने-सीखने में 'अणुव्रत' पत्रिका एक साधन रही है।

'अणुव्रत' ने देशकाल, परिस्थितियों, वातावरण की थाह पाते हुए मानवीय द्वंद्वों को भी भरपूर स्थान दिया है। समस्याओं को वृहद् नहीं, समाधान को अधिक स्थान दिया है। नकारात्मकता का नहीं, सकारात्मकता का स्वागत किया है। पाठकों को परिवार से अधिक समाज के दायित्व बोध की ओर अग्रसर किया है। संभवत: मकसद यही रहा होगा कि समाज बचेगा तभी तो परिवार कायम रहेंगे। परिवार सुरक्षित तो मानव भी सुरक्षित रहेगा।

पत्रिका ने इंसानों का इंसानों से बेहतरीन रिश्ता कायम रहे, पर अपना विमर्श केन्द्रित किया। इंसानों का जानवरों से प्रेम भी बनाये रखा। यह कहना उचित होगा कि 'अणुव्रत' की रचना सामग्री इशारा करती रही है कि यह धरती सभी जीवधारियों की है।

– **मनोहर चमोली 'मनु'**, पौड़ी गढ़वाल

तन-मन का उपचार करती पत्रिका

यद्यपि मुझे 'अणुव्रत' पत्रिका से जुड़े अभी बहुत अधिक समय नहीं हुआ है, किन्तु एक मनुष्य के रूप में मैंने जैसे

मानव समाज की कल्पना की थी, 'अणुव्रत' पत्रिका चिन्तन की उसी धारा को सतत प्रवाहित किये हुए है। इसकी हर रचना ऐसी लगती है मानो मेरे मन की बात कह रही हो। सबसे बड़ी बात, बाजारवाद के इस दौर में जहाँ साहित्य ने भी समझौतावादी प्रवृत्ति को अपना लिया है, वहीं 'अणुव्रत' पत्रिका अपने उद्देश्य को लेकर सुदृढ़ता से डटी हुई है। ...और इसका उद्देश्य है समाज की शुद्धि करना, धर्म के सही स्वरूप से अवगत कराना तथा पुरुषार्थ का दीप जलाना। पत्रिका में समाहित साहित्य सामग्री जीवन के सम्पूर्ण दर्शन से हमें अवगत कराती है। यह जीवन से लेकर परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व तक के चिन्तन को अपनी परिधि में समेटे है।

– **डॉ. लता अग्रवाल 'तुलजा'**, भोपाल

पथ प्रदर्शक पत्रिका

सामाजिक समरसता, नैतिकता, नशामुक्ति व अहिंसा का संदेश देते हुए, व्यक्तित्व विकास को एक उद्देश्य मानते हुए, जनमानस की चेतना को निरंतर जागृत कर एक पथ प्रदर्शक की महती भूमिका निभा रही है 'अणुव्रत' पत्रिका। इसकी सोच और समग्र दृष्टि व्यक्ति की अंतरात्मा को झंकृत कर उसे अपने जीवन को सही दिशा देने की ओर प्रेरित करती है। जाति, धर्म, पंथ, इनसे ऊपर उठकर कैसे एक सकारात्मक दृष्टिकोण को अपनाया जाये और मैत्रीपूर्ण वातावरण निर्मित किया जाये, इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों और संपादकीय से भली-भाँति सीखा जा सकता है। नैतिकता के संवर्धन और सामाजिक चेतना के विकास में इस पत्रिका की अहम भूमिका है। व्यक्ति को एक बेहतरीन इंसान बनने के साथ-साथ उसकी सोच को परिष्कृत करने का दायित्व भी यह पत्रिका बखूबी निभा रही है।

– **सुमन वाजपेयी**, नयी दिल्ली

अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

के गौरवशाली प्रकाशन

'अणुव्रत'
पत्रिका

प्रकाशन के **70** वर्ष

विशेष छूट योजना

'बच्चों का देश'
पत्रिका

प्रकाशन के **25** वर्ष

सदस्यता अभिवृद्धि के आकर्षक अभियान से जुड़िए

अवधि	अणुव्रत	बच्चों का देश
1 वर्ष	₹ 800	₹ 500
3 वर्ष	₹ 2200	₹ 1350
5 वर्ष	₹ 3500	₹ 2100
15 वर्ष (योगक्षेमी)	₹ 21000	₹ 15000

भुगतान के लिए QR कोड को स्कैन करें

ANUVRAT VISHVA BHARATI SOCIETY
IDBI BANK Rajsamand Branch
A/c No.: 104104000046914
IFSC Code : IBKL0000104

इस मुहिम में अणुव्रत समिति और अणुव्रत मंच के साथ-साथ रुचिशील कार्यकर्त्ता व्यक्तिगत स्तर पर भी जुड़ सकते हैं।

विशेष सदस्यता अभियान की जानकारी के लिए सम्पर्क करें

- संयोजक : विनोद बच्छावत +91 88263 28328
- कार्यालय : +91 91166 34512, 94143 43100